ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अईल किৰण OIL KIRAN | 2020 | वर्ष 17 अंक 27 |

कोरोना से बचें

सही से मास्क पहनें

हाथ धोएं बार बार

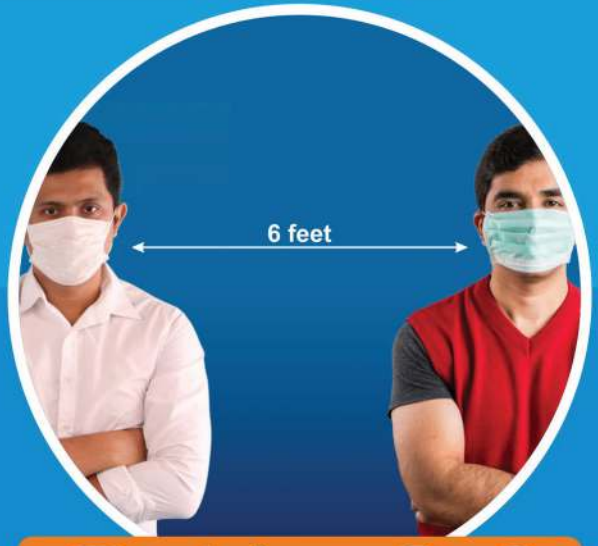

निभाएं दो गज की दूरी

जब तक दवाई नहीं
तब तक ढिलाई नहीं

सम्पादकीय

ऑयल इंडिया लिमिटेड की एक मात्र हिंदी में प्रकाशित होने वाली छमाही गृह पत्रिका ''ऑयल किरण'' का 27वां अंक अपने नए कलेवर और साज-सज्जा के साथ आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अभिव्यक्ति हो रही है।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है। भाषा के बिना न तो एक दूसरे को समझा जा सकता है और न ही पारस्परिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है। हमें कभी भी अपनी मातृभाषा को नहीं भुलाना चाहिए। गाँधीजी मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे, परन्तु साथ ही वे विश्व की अन्यान्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने पर भी जोर देते थे। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की कड़ी है। संस्कृत भाषा हमारी भारतीय भाषाओं को बहुत सशक्त करती है। हिंदी संस्कृत की बेटी है। हिंदी की महत्ता को देखते हुए भारत के संविधान में इसे राजभाषा का स्थान दिया गया है। मेरा सभी कार्मिकों से आग्रह है कि वे अपना अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य मूल रूप से हिंदी में ही करें। ऑयल कच्चे तेल के अन्वेषण, उत्पादन एवं परिवहन तथा प्राकृतिक गैस के वितरण करने जैसे महत्वपूर्ण कार्यों से जुड़े होने के बावजूद, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करने तथा हिन्दी के विकास कार्यक्रम पर लगातार ध्यान देती आ रही है। हमारी कंपनी, राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

आज समस्त विश्व कोविड-19 महामारी से जूझ रहे हैं। कोरोना महामारी के दौर में, मैं उन सभी कोरोना सेनानियों यानी सभी डॉक्टरों, नर्सों, पुलिस कर्मियों, संबंधित प्रशासन कर्मियों आदि के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने लाखों कोरोना रोगियों को स्वस्थ किया है। उम्मीद है कि सभी के संयुक्त प्रयासों से ही कोरोना वायरस से जल्द से जल्द छुटकारा पाने में सक्षम होंगे। इस कठिनाई के दौर में भी हम अपनी हिंदी पत्रिका "ऑयल किरण" का नवीनतम अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। आपके द्वारा प्रदत्त लेख, रचना, यात्रा वृतांत, कविता, साहित्य परिचर्चा आदि इस पत्रिका की शोभा है जिसमें आप अपने विचार व दृष्टिकोण अभिव्यक्त किए हैं। नियमित रुप से प्रकाशित होने वाली यह गृह पत्रिका इस बात का द्योतक है कि हम सभी कार्मिक हिंदी में कार्य करने के प्रति सदैव समर्पित हैं।

मैं आशा करता हूं कि सभी कार्मिक "ऑयल किरण"के इस अंक में संकलित लेख को पसंद करेंगे। "ऑयल किरण" के इस अंक को उत्कृष्ट एवं पठनीय योग्य बनाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। मुझे उम्मीद है कि "ऑयल किरण" आप सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। इसे और ज्ञानवर्धक, रोचक तथा बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत है, जिससे पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक बनाया जा सके। हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक(राजभाषा), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार
श्री प्रशान्त बोरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मा.सं. एवं प्रशा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक
श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -IV), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (इजी-I) पीजी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिगन्त डेका, वरिष्ठ सहायक - I (हिन्दी अनुवादक), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

ऑयल किरण
वर्ष - 17, अंक - 27

आवरण विषय
कोरोना से सावधानी

इस अंक में .....

कोरोना	6
हालात	6
वक्त का पहिया	7
हिन्दी - दिवस	7
क्या गलती है हमारी	8
मातृभूमि	10
हम बेटी जग में ना जन्मे	10
हार न मानेंगे हम	11
आज, कल और हमेशा	11
अनिता निहालानी की कुछ कविताएं	12
नारी	14
अपने दुःखों का कारण आप ही है	14
भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार	15
स्वस्थ्य तथा सेहत	18
मानो या ना मानो	19
ईमानदारी - एक जीवन शैली	20
राजभाषा हिन्दी और उसका उत्कर्ष	20
भोजन का नियमः अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी	21
कहीं देर ना हो जाये	23
भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति.....	24
दाँतों से जुड़ी कुछ गलतफहमियाँ	26
Lockdown और मैं	27
एक समृद्ध भारत के लिए एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत	28
जीवन में सब्र का महत्व	31
ईमानदारी महान गुण है	32
शालीनता महापुरूषों का गुण है	32
प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ परीक्षा 2019 के परिणाम	33
ऑयल राजभाषा समाचार	**34-42**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

दिलीप कुमार दास

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी छमाही हिंदी गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 27 प्रकाशित किया जा रहा है।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है। वैचारिक आदान-प्रदान, व्यापार-व्यवहार का आधार भाषा है अर्थात भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है। हिंदी का प्रयोग अब पूरे भारत में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। इसलिए कार्यालयीन कामकाज में भी राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार के पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अंतर्गत एक अग्रणी नवरत्न पेट्रोलियम कंपनी है। इसका मुख्य कार्य कच्चे तेल का अन्वेषण, उत्पादन तथा परिवहन एवं प्राकृतिक गैस का वितरण करना है। इसके बावजूद हमारी कंपनी भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के प्रति दृढ़ संकल्पित है। इस दिशा में अनेक रचनात्मक एवं गुणात्मक कार्य किए गए हैं। उदाहरणस्वरुप चाहे वह प्रशिक्षण के लिए उत्कृष्ट प्रोत्साहन योजना हो, तकनीकी विषय पर हिन्दी में पुस्तक लेखन के लिए प्रोत्साहन राशि हो, गुवाहाटी विश्वविद्यालय में असमिया-हिंदी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव फेलोशिप की स्थापना हो एवं असमिया साहित्यि के प्रसिद्ध रचनाकारों की कृति को हिन्दी में अनुवाद करवाने का निर्णय हो। यह राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी सकारात्मक चिंतन को दर्शाता है। हम कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने और हिंदी का सकारात्मक वातावरण सृजन करने का प्रयास निरंतर करते रहते हैं ताकि नई पीढ़ी को हिंदी भाषा का महत्व समझ में आ सके। हम राजभाषा हिंदी के विकास को निरंतर चरितार्थ करने के लिए अपना योगदान देते रहेंगे और आप सभी से भी पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

(दिलीप कुमार दास)

प्रशांत बोरकाकोती

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हमारी छमाही गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 27 का प्रकाशन होने जा रहा है।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है। भाषा समाज को सदैव एकता के सूत्र में बाँधे रखती है। भाषा कोई भी हो, वह हमें भाई-चारे का संदेश देती है। हिन्दी भाषा कश्मीर से कन्या कुमारी तक तथा अरूणाचल से गुजरात तक सभी लोगों को एकता के सूत्र में बांधे रखने की क्षमता रखती है।

हिंदी का प्रयोग अब पूरे भारत में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। हिंदी आज एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी उभरकर सामने आई है।

ऑयल किरण का निरंतर प्रकाशन किया जाना, कंपनी द्वारा किए जाने वाले राजभाषा कार्यान्वयन का ही एक हिस्सा है। यह कार्मिकों तथा उनके आश्रितों को एक मंच प्रदान करती है, जिसमें विशेषकर नई पीढ़ी अपनी सृजनात्मक लेखन कला को उजागर कर सकते हैं। आपके द्वारा प्रदत्त लेख, रचना, यात्रा वृतांत, कविता, साहित्यिक परिचर्चा आदि इस पत्रिका की शोभा है, जिसके माध्यम से आप अपने विचार व दृष्टिकोण अभिव्यक्त कर सकते हैं।

ऑयल किरण के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

प्रशांत बोरकाकोती

(प्रशांत बोरकाकोती)

दिलीप कुमार भूयां

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं
उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी छमाही गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' का वर्ष 17, अंक 27 को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी हमारे देश की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हमें अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। आप सभी अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहित करें, जिससे कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर सकें तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

आज पूरा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा है। इसके कारण हर दिन लाखों लोग बीमारी के चपेट में आ रहे हैं। इसी दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड के बाघजान कूप संख्या 5 में ब्लोआउट हुआ। इस परिस्थिति में भी हमने राजभाषा कार्यान्वयन को विशेष महत्व देते हुए, हिंदी में प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'ऑयल किरण' का यह अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी समर्पित भावना को दर्शाती है। इस पर हमें गर्व है। मैं उन सभी को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने इस परिस्थिति में भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। हमारी छमाही गृह-पत्रिका ऑयल किरण के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा है कि हमारे संयुक्त व सतत प्रयासों के परिणामस्वरुप 'ऑयल किरण' के इस नवीनतम अंक से आप सभी लाभान्वित होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

दिलीप कुमार भूयां

(दिलीप कुमार भूयां)

कोरोना

✍निजरा गोगोई
पर्यवेक्षण सहायक
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

तुम घातक
हत्यारे तुम।
मानवता के सुख तुम
लूट रहे हो
तुम्हारे आगमन पर
पृथ्वी का हास्य ख्वाब
हो गया है गुम।
तुम कर रहे हो अट्टहास
और कितने दिन
तुम्हारी भी एक दिन
मृत्यु अनिवार्य।
और खिलेगा फिर हमारी
हँसी और सुस्वास्थ्य से
जगत का तन और मन। ❑

हालात

✍रीवा कुमार
आश्रित - राकेश कुमार
महाप्रबन्धक (इन्डेग), दुलियाजान

उड़ने चले परिंदे अब,
घोंसले वीरान हैं।
खोखली हैं दरो-दीवार,
घर बने मकान हैं।
खड़कती नहीं हैं कुंडियाँ,
खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ।
अब किसी के घर कभी,
आते नहीं मेहमान हैं।

समाँ भी महकती नहीं,
फिजा भी सूनसान है।
सिर्फ गली-सड़क नहीं,
सारा शहर ही बियावान है।

क़ैद हैं कमरों में लोग,
उम्मीद की थामे ऊँगली।
राहों और दरवाजों पर,
लगाए हुए हैं टकटकी।
कैसे सँभालें हालात को,
जानकार हुए अनजान हैं।

खामोश है जुबां मगर,
दिल में उठ रहे तूफान हैं।
कहीं जमीं सुलग रही,
कहीं टूट रहा आसमान है। ❑

‘‘ भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता
अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है।
हिन्दी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। ’’

- नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

वक्त का पहिया

✍प्रणब ज्योति दास
वरिष्ठ प्रबंधक (मा. सं. एवं प्र.)
राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

वक्त ने कुछ ऐसी करवट ली
न सोचा था जो, वह विपत्ति आ पड़ी।

पलक झपकते ही महामारी कुछ ऐसे फैला,
मानो झील से बिखेरती गोलाकार लहरों की चिंगारी से उत्पन्न...
ज्वाला।

अभागा गरीब का रोजी-रोटी गई,
गया उसका रहने का ठिकाना।

इधर-उधर वह भटका राही,
दुर्गम पथ पर निरंतर चला।
लिखी अपनी संघर्ष कहानी...
बनाकर खुद की खून को स्याही।

बिखरे परिवार...
न खाने को कुछ दाना पानी,
बच्चे बुजुर्ग सब तपती राह में चले।
मंजिल कितनी दूर...
नहीं है किसी को पता यह कहानी।

सरकार की आश्वासन और व्यवस्था की मारामारी,
कल तक जो नियोजित था,
आज बन चुका भिखारी।

मृत्यु सहज लगने लगी,
जिंदगी लगने लगी भारी।

फिर भी जिंदगी नायाब है तो...
जीवन संघर्ष है जारी।

थके जरूर हैं, रुके जरूर हैं,
पर जीने की लालसा है...
हर मुसीबत पर भारी।

फिर वक्त बदलेगा,
कुछ तो जरूर अच्छा होगा,
विपत्तियां मिटेगी...
और जिंदगी हंसते मुस्कुराते आगे बढ़ेगी। ❑

हिन्दी-दिवस

✍रीवा कुमार
आश्रित - राकेश कुमार
महाप्रबन्धक (इन्डेग), दुलियाजान

विश्व गुरु की हम संतान,
हिन्दी थी अपना अभिमान।
क्यों हिन्दी अब नहीं सुहाती,
बन गये हैं इंगलिश के साथी।
भूला चुके अपनी संस्कृति,
भूल गये अपनी पहचान।
विश्व गुरु की हम संतान।

पहनते ओढ़ते हैं अंग्रेज़ी,
खान-पान भी बस अंग्रेज़ी,
घर आँगन या बाजार दफ्तर,
इंगलिश आगे पीछे हिन्दी।
अंग्रेज़ी को अब पीछे कर,
हर दिन हिन्दी दिवस मनाकर,
चलो बढ़ाए इसका मान।
विश्व गुरु की हम संतान।

भारत था सबका भाग्य विधाता,
विश्व प्राचीन सभ्यता का दाता।
प्राचीनतम विश्वविद्यालय इसके,
गणित, विज्ञान साहित्य का ज्ञाता,
सागर से भी गहरे वेद पुराण।
विश्व गुरु की हम संतान।

दिये विश्व को कई उपहार,
शून्य, योग, संस्कृति संस्कार।
स्नेह से जोड़े सदा सभी को,
सम्पूर्ण विश्व को समझे परिवार।
अनेकों भाषा लिपि व बोली देश में
इन सबसे ऊपर है राष्ट्रगान।
विश्व गुरु की हम संतान।

हम टुकड़ों में बँटे हुए हैं,
ऊँच नीच में छँटे हुए है।
वाद, प्रान्त, वेश, व बोली,
कई हिस्से में कटे हुए हैं।
कहाँ थे कल, आज कहाँ हैं,
बिना समझ के लुटे हुए हैं।
पहचाने अपनी पहचान।
है हिन्दी तो हिन्दुस्तान।
विश्व गुरु की हम संतान। ❑

क्या गलती है हमारी

✍नवनीता राजपूत
आश्रित - कमलजीत राजपूत, महाप्रबंधक (वेधन परियोजना)
वेधन विभाग, दुलियाजान

कहते हैं लड़का- लड़की एक समान,
पर फिर मुझे ही हमेशा
क्यों गलत माना जाता है?
क्या मैं लड़कों की तरह रात को
बस से घर नहीं लौट सकती?
क्यों मेरे साथ वो हुआ, जो नहीं होना चाहिए था ?
क्या गलती थी मेरी?
जो उस रात,
मुझे दिल्ली की उस सड़क पर
अर्ध कपड़ों में फेंक दिया गया।
आख़िर क्यों मुझे इस देश के लिए निर्भया और दामिनी बनना पड़ा?
क्यों समाज ने मेरी जींस और लिप्स्टिक पर सवाल उठाये?
क्या गलती थी मेरी??

मैं तो 71 साल की एक मठ वासिनी थी।
मैं तो पूरी ढकी हुई थी- बालों से पैरों तक।
आख़िर क्यों मेरे साथ ये सब हुआ
मैंने तो बस गिरजाघर को लूटेरों से बचाने की कोशिश की थी।
क्या यही मेरी गलती थी?
क्या अब एक औरत किसी की रक्षा भी नहीं कर सकती?
क्या गलती थी मेरी?

मैं तो 8 साल की थी,
एक नासमझ लड़की थी।
मुझे बहकाया गया, प्रताड़ित किया गया और फिर, मार दिया गया।
मंदिर जैसी पवित्र भूमि को मेरे लहू से लाल रंग दिया गया।
क्या वे मेरी जनजाति को डराकर भगाना चाहते थे ?
क्या हमें वहाँ, कठुआ में रहने की अनुमति नहीं थी?
क्या गलती थी मेरी?

दुनिया के सबसे पवित्र रिश्ते से बंधे थे हम,
एक पिता-पुत्री का रिश्ता था।
सीतापुर में जन्मी जनक पुत्री की एक स्वरूप थी मैं।
आख़िर क्यों मेरे ही पिता ने मुझे,
अपने उन गुंडे दोस्तों के हाथों पकड़ा दिया?
इसमें तो मेरी गलती नहीं थी ना?
क्यों इस सीता को जनक समान पिता ना मिला?
क्या गलती थी मेरी?

मैं हूँ उन्नाव की एक लड़की,
काम करके घर चलाना चाहती थी।
क्या यही मेरी गलती थी?
मुझे बहलाया-फुसलाया गया,
नौकरी के नाम पर बेचा गया,
और बार-बार वो गलत काम करते रहे।
मैं बच कर भागी, अब इंसाफ़ की लड़ाई लड़नी जो थी।
शिकायत की थी मैंने पर किसी ने ना सुनी।
तंग हो चुकी थी मैं, इस बेरहम दुनिया के तानों से।
अब और शक्ति नहीं बची थी मुझमें,
पहुँची योगी आदित्यनाथ के घर के सामने
इस दर्द से उभरने के लिए,
आत्महत्या की कोशिश की पर,
अपनी जान भी ना ले सकी।
लोगों ने मुझे इंसाफ़ दिलाने की बहुत कोशिश की,
और मेरी पुकार उस न्यायालय तक पहुँची।
एक-एक कर मेरे परिवार को नष्ट कर दिया।
मैं ज़िंदा हूँ, साँस ले रही हूँ,
पर इंसाफ़ अभी मिलना बाक़ी है।
क्या गलती थी मेरी??

ये सब छोड़ो, मेरी कहानी तो आप सबका दिल दहला देगी।
मैं एक लड़की आप जैसी ही,
उम्र में बहुत ही छोटी।
मैंने अभी बस दुनिया को पहचानना शुरू किया था।
हाँ, मैं बस चार महीने की थी।
आख़िर क्या गलती थी मेरी?
मैं तो घर में थी और सो रही थी।
क्या मैं डाइपर में थी इसलिए?
पर मैं साड़ी कैसे पहनती?
क्या गलती थी मेरी?

सात साल निर्भया को होने वाले हैं।
सोचा था, अब तो हम लड़कियाँ चैन की साँस ले सकेंगी।
पर मेरे साथ कुछ यूँ हुआ
कि अब तो लड़कियाँ मदद लेने से भी डरेंगी।
मैं हूँ प्रियंका रेड्डी, मुझे क्यों देश के लिए दिशा बनना पड़ा?
क्या गलती थी मेरी ?
काश! उस दिन पुलिस ने मेरे परिवार की बात समय पर सुनी होती,
तो मैं, आज ज़िंदा जलायी ना जाती,
कुछ और जानवरों को बचा पाती।
इन दरिंदों को तो जीवन का अधिकार भी नहीं था,
उन पुलिस अफ़सरों ने उन्हें उसी जगह,
जहां मैंने अपनी अंतिम साँस ली थी,
ठीक वहीं, उनका एन्काउन्टर कर दिया।
मेरी आत्मा को तो शांति मिली पर,
मेरे जैसी बाक़ी लड़कियों का क्या?

अभी कुछ दिन ही हुए थे प्रियंका को,
मुझे एक बार फिर अख़बारों की ख़बर बनना पड़ा।
हाँ, मैं वही पीड़िता हूँ, जो गलती से ज़िंदा बच गयी थी।
जी हाँ, उन्नाव वाली लड़की।
क्या गलती थी मेरी?
मैं तो अपना इंसाफ़ चाहती थी,
न्यायालय जा रही थी।
फिर क्यों मुझे ज़िंदा जलाया गया?
पर मुझे इंसाफ़ चाहिए था।
मैंने 90% जलने के बाद भी 112 को बुलाया,
अपना बयान दिया
2 दिनों तक ज़िंदगी को धोखा देने के बाद?
मैंने Safdarjung हॉस्पिटल में अपनी अंतिम साँस ली।
क्या गलती थी मेरी???

हमें न्याय मिलेगा ना?
समाज कहता है हमारे कपड़े गलत हैं,
पर हम तो डाइपर से लेकर बुर्के में थे,
तो हमारे कपड़े कैसे गलत हो सकते हैं??
गलत है तो उन दरिंदों की सोच जो सड़कों पर शिकार ढूँढने निकलते हैं,
और जो मिलता है, उसे रौंद जाते हैं।
जिन्हें ये सब करने से पहले,
उस रमा की भी याद नहीं आती,
जिसने उन्हें जन्म दिया,
उनके घर की लक्ष्मी,
जिसने उनके साथ रहने की क़सम खायी,
ना ही याद रही वो ब्राह्मणी,
जो उनकी बहन और बेटी थी।
क्या यही है भारत का नया चेहरा ?
जहां देवियों को पूजा तो जाता है,
पर नारी को उचित सम्मान नहीं मिलता।
क्या मुझे इसलिए बचाया, पढ़ाया और पैरों पर खड़ा किया जाता है ताकि समाज में घूमते दरिंदे मुझे अपना आहार बना सकें?
क्यूँ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और दरिंदो को खिलाओ प्रतीत होता है?
क्यूँ हर 15 मिनट में,
एक लड़की के साथ घिनौना काम होता है?
आख़िर, क्या गलती है हमारी?? ❑

मातृभूमि

✍ **कुशल मजुमदार**
कनिष्ठ सहायक,
प्रशासन विभाग,
कोलकाता कार्यालय

हम तेरे युवक संतान
तेरे हृदय के बल।
तुम्हें प्यार करते हैं हम
नहीं किया कभी छल ।।
बुलाने पर तुम्हारे
लाखों बेटों ने दिया जान हंस के।
दिया अपने लहू
प्यार तुम्हें करके ।।
कितनों बहनों ने तुम्हारे लिए
गंवाया अपना सम्मान ।
लाखों माओं ने गंवाया हंस के
तुम्हारे लिए अपनी संतान ।।
हर रंग के झंडे में तिरंगा है
जैसे त्याग का सूरज ।
देश के लिए हम सोचते हैं
जीवन एक सतरंज ।।
आज भी हम राजी हैं
हृदय में रहेगा खुशी ।
तुम्हारे लिए रोते हैं हम
दुःख में रहेगा सदा हंसी ।।
तुम कभी डरना मत
कभी नहीं करूंगा भूल।
हम हैं तुम्हारे शक्ति और साहस
वीर वेदों का बल ।।
मन में तुम रहती हो मां
सपने में भी तुम ।
तुम मेरे प्राणों से प्रिय हो
मेरा भारत मातृभूमि ।। ❑

हम बेटी जग में ना जन्मे

✍ **तनु गुप्ता**
आश्रित - सचिन गुप्ता
मुख्य अभियंता (तैलाशय)
राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

मासूम कली को खिलने दो,
मत कुचलो, तुम मत कुचलो,
यह उपदेश मैंने बहुत सुने,
रहने दो, तुम रहने दो।

रूह मेरी कांप रही,
हर खतरे को भांप रही.
सिसक रही, मैं तड़प रही,
इस जग से, मैं रुठ रही।

कुछ भी तो मैं कह ना सकी,
जुबां मेरी कट जो गई
इस जग में, मैं जी ना सकी,
आखिरकार मैं लुट ही गई।

रैली मार्च खूब दिखा रहे,
मोमबत्तियां भी तुम जला रहे,
क्या जला पाओगे तुम उनको,
जिसने मन मंदिर में घाव किए।

तुम सब से फरियाद करूं क्या?
अब रब से है फरियाद मेरी,
हम बेटी जग में ना जन्मे,
इतनी सुन ले पुकार मेरी....
हम बेटी जग में ना जन्मे,
इतनी सुन ले पुकार मेरी..... ❑

हार न मानेंगे हम

(देश की रक्षा हेतु अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर शहीदों के चरण में समर्पित)

✍ऋतुराज बोरा
वरिष्ठ सहायक, सामग्री विभाग
दुलियाजान

चाहे कैसा भी परिस्थिति क्यों न आए
हार न मानेंगे हम,
साहस और धैर्य से काम लेंगे
मरने से न डरेंगे हम।
देश की रक्षा और इज्जत के खातिर
जान की परवाह न करेंगे हम,
हिमालय की ऊँची शिखर में तिरंगा लहरायेंगे
आखरी सांस तक न लेंगे दम।
सदियों से महान है मेरा प्यारा भारतवर्ष
जिसकी विविध संस्कृति और समृद्ध पर हमें है गौरव और हर्ष,
देश को आजादी मिली वीर शहीदों के बलिदान से
अपना गौरव हमने पाया, अपने स्वाभिमान से।
देश की मर्यादा हमेशा ऊँचा करेंगे
दुश्मनों का डटकर सामना करेंगे,
देश की रक्षा के खातिर पीछे न मुड़ेंगे हम।
सुभाष, तिलक जैसे वीर शहीदों के देश से हैं हम,
चाहे कैसा भी परिस्थिति क्यों न आए
हार न मानेंगे हम। ❑

आज, कल और हमेशा

✍प्रतीक बरुवा
अधीक्षण अभियंता
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग,
दुलियाजान

आज अगर माहौल हमसे खफा है
ज़ाहिरी के लिए हमेशा हमारे पास सिर्फ वफ़ा है !
हर रात भले ही रूह को बिखरना है
हर सुबह फिर खुद को समेटना है।
आज अगर अपनों को मुंह मोड़ना है
कल फिर सच्चे रिश्तों को बटोरना है।
हर दोस्त के लिए दो पल रुकना है
हर एक ईमानदारी के लिए ज़ेहन को झुकना है।
आज किसी के अधूरे वादों को भूलना है
कल नए ऐतबार पे ज़िन्दगी को चलना है।
हर वहम से आज मुकाबला है
सिर्फ इज्जत नहीं ये सदाक़त का मामला है।
आज तरक्की की सीढ़ी काबिलियत है
कल फलक पर अमन का वजूद इंसानियत है।
हर एहसास को आज ऐसे ही कागज पे उतारना है
क्या पता कल किसको किस हालत से गुज़रना है !! ❑

"आप जिस तरह बोलते हैं,
बातचीत करते हैं,
उसी तरह लिखा भी कीजिए।
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।"

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

अनिता निहालानी की कुछ कविताएं

मन और मौन

शब्दों की गलियों में गोल घूमता है
मन का मयूर यह व्यर्थ ही झूमता है

अनंता-अनंत जो चहुँ ओर व्याप्त रहा
नाप लिया हो जैसे 'अम्बर' नाम दिया

'मन' भी आकाश सा कोई न माप सका
स्वयं सीमित होकर शब्द आकार लिया

शब्द अभी पीड़ा दें पल में सहला दें
स्वयं ही रचे मन शब्दों से बहला दे

नाम-रूप भरम में नाम ही बंधन है
मौन आश्रय जिसे पार ही चिरंतन है ❑

अभी तो जिंदा हैं हम

दूर खड़ी है अभी तो मृत्यु
जब आएगी तब आयेगी
अभी तो जी लेने दो
लोग मरते हैं उन्हें मरने दो
अभी तो जिंदा हैं हम
अभी से क्यों करें उसका गम
अभी होश में आने को मत कहो
अभी तो देखने दो सपने
अभी तो झटक डालो यह बात भी
अभी तो दिन है न कहो
कभी आएगी रात भी
ये जलती हुई चिताएं औरों की हैं
ये धूल में दबी देह अपनी तो नहीं
जो राख हो गये वे दूसरे हैं
अभी तो खेलने खाने के दिन हमारे हैं.... ❑

एकम् सत्य

चाहो किसी भी रूप में
किसी आकार में
अथवा अरूप या निराकार
वह सबका है
नहीं अधिकार किसी को भी
करे आहत अन्य की भावना
आक्रांता बन तोड़े आस्था के स्थल
मुखरित होता है वह चैतन्य
भक्ति, करुणा और प्रेम में
फिर क्योंकर एक का समर्पण
दूसरे की आँख में खटकता है
सत्य एक ही है पर अनेक मार्गों से मिलता है
किसी पुष्प गुच्छ की मानिंद
गुँथे हैं सभी पंथ और मत
मानवता के मंदिर में
हरेक अपनी महिमा में आप ही महकता है
फिर भी पूरक है दूजे का
विरोधी नहीं
जिस दिन स्वीकार होगा
उसी प्रकार जैसे
स्वीकारते हैं संगीत और शिल्प
आनंद लेते हैं विविधताओं का
हर पंथ अनूठा है
सार सबका एक है
प्रेम जगाना है अंतर में
आनंद उसी की परिणति है ! ❑

अपनी अपनी जेल

कोई जेलर बनता है अपनी इच्छा से
जेल में वह भी आता है
और कैदी को लाया जाता है उसकी इच्छा के विरुद्ध
ऐसा लगता है ऊपर-ऊपर से,
पर कैदी भी अनजाने में
क्या इच्छा नहीं कर रहा था इसी की....

जेलर आनन्दित है
ऐसा दिखता है ऊपर-ऊपर से
पर उसके दुःख भी वैसे ही हैं
मात्रा कम या अधिक हो सकती है
दुःख सताते हैं उसे भी
आखिर कैदी है वह भी
एक बड़ी जेल का, जिसका जेलर दिखाई नहीं देता
जो तभी मुक्त करता है
जब कैदी उसके जैसा बन जाता है
क्यों कि वह जेल बनायी है उसने स्वयं ही.... ❑

अर्थवान हों शब्द हमारे

शब्दों का संसार सजाया
मन जिसमें डूबा उतराया,
पहुँचा कहीं न लोटपोट कर
वैसे का वैसा घर आया !

शब्दों की लोरी बन सकती
तंद्रा भीतर जो भर देती,
नहीं जागरण संभव उससे
नींद को वह गहरा कर देती !

शब्दों को तलवार बनाया
इनको ही तो ढाल बनाया,
मोती कुछ लेकर आयेंगे
शब्दों का इक जाल बनाया !

शब्द अकेले क्या कर सकते
यदि अर्थ न उनमें भर सकते,
अर्थ बिना न कोई कीमत
शब्द नहीं पीड़ा हर सकते !

अर्थ वही जो अनुभव देता
प्रामाणिक जीवन कर देता,
परिवर्तन कर अणु-अणु का
भावमय अंतर कर देता ! ❑

‘‘ हिन्दी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है,
जिसे बिना भेद भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है। ’’

- मदन मोहन मालवीय

नारी

✍दामिनी दुबे
आश्रित : अभिषेक कुमार दुबे
मानव संसाधन एवं प्रशासनिक अधिकारी
राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"
अर्थात "जहां नारियों को सम्मान दिया जाता है वहाँ साक्षात देवता निवास करते हैं"

ये आपकी या मेरी कही हुई बात नहीं है। ये वेद में लिखा हुआ वाक्य है। फिर भी इस सत्य का अनुसरण समाज में आज भी नहीं हो रहा है और सदियों से उपेक्षा के बादल मंडरा रहे हैं। साक्षात शिव ने अर्द्धनारीश्वर का रूप धारण किया था इस बात को समझाने के लिए की सृष्टि और समाज नारी के बिना पूर्ण नहीं है। फिर भी आज यह बताने की जरूरत पड़ रही है कि नारियों को भी उनका अधिकार मिलना चाहिये। विषय के आधुनिक पक्ष का विचार करें तो अगर समाज में नारी का अधिकार पुरुष के बराबर है तो क्यों तरह-तरह की योजनाएं लागू की जा रही है। कहीं ना कहीं हमारे समाज की मानसिकता अभी भी यही है कि औरत आरक्षण के बिना कामयाब नहीं हो सकती है । तो हमें आज यह चिंतन करने की आवश्यकता है कि जो नारी सृष्टि की संरचना में आधी भूमिका निभाती है क्या वो समाज के तथाकथित पहरेदारों के बिना जीवनयापन नहीं कर सकती है।

भारत एक ऐसा देश है जहां पौराणिक संस्कृति के साथ-साथ महिलाओं के सम्मान और इज्जत के लिए जाना जाता है। भारत में देवियों की पूजा हर घर हर मंदिर में होती है। यहां नदियां नारियों के नाम से जानी जाती है। लेकिन बदलते समाज के अनुसार लोगों की सोच में भी बदलाव आ गया है जिसके कारण बेटियों और महिलाओं के साथ सम्मान का व्यवहार नहीं किया जाता है। लोगों की सोच में इस कदर दरिंदगी आ गयी है कि आए दिन देश में भ्रूण हत्या और बलात्कार जैसे मामले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। जिसके कारण हर घर में बेटियाँ अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर रही है। महिला सशक्तिकरण और उत्थान सिर्फ नारेबाजी बनकर रह गयी है। नारी की सुरक्षा किसी एक की लड़ाई नहीं है, यह सबकी लड़ाई है। अपना सुरक्षा चक्रव्यूह खुद बनाए । किसी भी लड़की का पिता, भाई या पति हर जगह मौजूद नहीं रह सकता लेकिन जहां एक बेटी होती है वहा मर्द के रूप में कोई ना कोई पिता, भाई या पति जरूर मौजूद होता है । आप किसी और की बहन को सुरक्षा प्रदान करेंगे तो कहीं कोई और आपकी बहन की रक्षा करेगा।

"मत भेद करो नर नारी में , इनके बल पर जग चलता है
नर जन्म लेकर भी मानव, नारी की गोद में पलता है" ❑

प्रेरक प्रसंग — अपने दु:खों का कारण आप ही है

एक समय की बात है, भगवान बुद्ध एक नगर में घुम रहे थे। उस नगर के आम नागरिकों के मन में बुद्ध के विरोधियों ने यह बात बैठा दी थी कि वह एक ढोंगी है और हमारे धर्म को भ्रष्ट कर रहा है। इस वजह से वहां के लोग उन्हें अपना दुश्मन मानते थे। जब नगर के लोगों ने बुद्ध को देखा तो उन्हें भला बुरा कहने लगे और बदुआएं देने लगे। गौतम बुद्ध नगर के लोगों की उलाहने शांति से बिना बोले सुनते रहे लेकिन जब नगर के लोग उन्हें बोलते-बोलते थक गए तो महात्मा बुद्ध बोले- 'क्षमा चाहता हूं! लेकिन अगर आप लोगों की बातें खत्म हो गयी है तो मैं यहां से जाऊं।'

भगवान बुद्ध कि यह बात सुन वहां के लोग बड़े आर्श्चयचकित हुए। वहीं खड़ा एक आदमी बोला - 'ओ! भाई हम तुम्हारा गुणगान नहीं कर रहे हैं। हम तो तुम्हें गालियाँ दे रहे हैं। क्या इसका तुम पर कोई असर नहीं होता???'

बुद्ध बोले - आप सब मुझे चाहे जितनी गालियाँ दो मैं उन्हें लूगा ही नहीं। आपके गालियाँ देने से मुझपर कोई असर नहीं पड़ता जब तक कि मैं उन्हें स्वीकार नहीं करता।

बुद्ध आगे बोले - और जब मैं इन गालियाँ को लूंगा ही नहीं तो यह कहां रह जाएगी? निश्चित ही आपके पास।

मित्रों, बुद्ध के जीवन का यह छोटा सा प्रसंग हमारे जीवन में एक नया परिवर्तन ला सकता है क्योंकि बहुत से लोग अपने दु:खों का कारण दूसरों को मानते हैं। जो कि अच्छी बात नहीं है। ऐसा कर हम स्वयं के लिए गड्ढा खोद रहे होते हैं। यह सब हम पर निर्भर है कि हम लोगों के negative बातों को कैसे लेते हैं। उन्हें स्वीकार कर रहे हैं या नकार रहे हैं। ❑

भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार

✍ **संदीप चक्रवर्ती**
प्रबंधक (सामग्री - एफ पी)
सामग्री विभाग, दुलियाजान

भ्रष्टाचार न केवल हमारे निजी जीवन के लिए अभिशाप है बल्कि यह राष्ट्र के विकास में भी बाधक है।

भ्रष्टाचार का अर्थ

भ्रष्टाचार का मतलब इसके नाम में ही छुपा है भ्रष्टाचार यानी भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो।

भ्रष्टाचार में मुख्य घूस यानी रिश्वत, चुनाव में धांधली, ब्लैकमेल करना, टैक्सचोरी, झूठी गवाही, झूठा मुकदमा, परीक्षा में नकल, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन, हफ्ता वसूली, जबरन चंदा लेना, न्यायाधीशों द्वारा पक्षपातपूर्ण निर्णय, पैसे लेकर वोट देना, वोट के लिए पैसा और शराब आदि बांटना, पैसे लेकर रिपोर्ट छापना, अपने कार्यों को करवाने के लिए नकद राशि देना यह सब भ्रष्टाचार ही है। अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन ट्रांसपैरंसी इंटरनैशनल की 2020 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में भारत का भ्रष्टाचार में 80 वां स्थान है।

हमारे देश में भ्रष्टाचार आज से नहीं बल्कि कई सदियों से चला आ रहा है और यह दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसके कारण हमारे देश की हालत खराब होती जा रही है। एक पद विशेष पर बैठे हुए व्यक्ति का अपने पद का दुरुपयोग करना ही भ्रष्टाचार कहलाता है। ऐसे लोग अपने पद का फायदा उठाकर कालाबाजारी, गबन, रिश्वतखोरी इत्यादि कार्यों में लिप्त रहते हैं, जिसके कारण हमारे देश का प्रत्येक वर्ग भ्रष्टाचार से प्रभावित होता है। इसके कारण हमारे देश की आर्थिक प्रगति को भी नुकसान पहुँचता है। भ्रष्टाचार दीमक की तरह है जो कि धीरे-धीरे हमारे देश को खोखला करता जा रहा है।

आज हमारे देश में प्रत्येक सरकारी कार्यालय, गैर-सरकारी कार्यालय और राजनीति में भ्रष्टाचार कूट-कूटकर भरा हुआ है जिसके कारण आम आदमी बहुत परेशान है। इसके खिलाफ हमें जल्द ही आवाज उठा कर इसे कम करना होगा नहीं तो हमारा पूरा राष्ट्र भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाएगा।

भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार

भारत में भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी अधिक गहरी है कि शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र बचा हो, जो इससे अछूता रहा है। राजनीति तो भ्रष्टाचार का पर्याय बन गयी है। आज भारत में भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में बढ़ रहा है, कालाबाजारी अर्थात जान बूझकर चीजों के दाम बढ़ाना, अपने स्वार्थ के लिए चिकित्सा जैसे क्षेत्र में भी जान बूझकर गलत ऑपरेशन करके पैसे ऐंठना, हर काम पैसे लेकर करना, किसी भी सामान को सस्ता लाकर महंगे में बेचना, चुनाव धांधली, घूस लेना, टैक्स चोरी करना, ब्लैकमेल करना, परीक्षा में नकल, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन करना, हफ्ता वसूली, न्यायाधीशों द्वारा पक्षपातपूर्ण निर्णय, वोट के लिए पैसे और शराब बांटना, उच्च पद के लिए भाई-भतीजावाद, पैसे लेकर रिपोर्ट छापना, यह सब भ्रष्टाचार है और यह दिन-ब-दिन भारत के अलावा अन्य देशों में भी बढ़ रहा है और कोई क्षेत्र भ्रष्टाचार से नहीं बचा।

शिक्षा विभाग भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रहा है। वह तो भ्रष्टाचार का केन्द्र बनता जा रहा है। एडमिशन से लेकर समस्त प्रकार की शिक्षा प्रक्रिया तथा नौकरी पाने तक, ट्रांसफर से लेकर प्रमोशन तक परले दरजे का भ्रष्टाचार मिलता है।

भारत में हुए सबसे बड़े भ्रष्टाचार के घोटाले जिन्होंने देश को हिलाकर रख दिया था. यही नहीं, इसके कारण भारत की छवि भी विश्व में घोटाले और घपले वाले देश के रूप में बनने लगी.

- कोयला घोटाला, साल 2012:घोटाले की रकम: 1.86 लाख करोड़
- 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, साल 2008:घोटाले की रकम: 1.76 लाख करोड़
- वक्फबोर्ड जमीन घोटाला, साल 2012:घोटाले की रकम: 1.5-2 लाख करोड़
- कॉमनवेल्थ घोटाल, साल 2010 घोटाले की रकम: 70 हजार करोड़
- सहारा हाउसिंग बॉन्ड घोटाला, साल 2010:घोटाले की रकम: 24 हजार करोड़
- तेलगी घोटाला, साल 2002 घोटाले की रकम: 20000 हजार करोड़
- सत्यम घोटाला, साल 2009:घोटाले की रकम: 14 हजार करोड़
- शारदा घोटाला, साल 2013 घोटाले की रकम: 10 हजार करोड़ रुपये
- एनएसईएल घोटाला, साल 2013 घोटाले की रकम: 5600 करोड़

- सिक्योरिटी घोटाला, साल 1992 घोटाले की रकम: 4 हजार करोड़

भ्रष्टाचार के कारण

भ्रष्ट राजनीति के कारण हमारे देश में हर दूसरा राजनेता भ्रष्ट है, उनकी छवि कलंकित है फिर भी वे राजनेता बने हुए हैं और सरकार चला रहे हैं। भाई भतीजावाद के कारण बड़े अफसर अपने पदों का दुरुपयोग करके अपने रिश्तेदारों को नौकरी दिलवा देते हैं, चाहे वह व्यक्ति उस नौकरी के नाकाबिल ही क्यों न हो, जिससे देश में बेरोजगारी तो फैलती ही है। झूठे दिखावे व प्रदर्शन के लिए। झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए।

देश के बड़े उद्योगपति अपना कर बचाने के लिए बड़े अफसरों को रिश्वत देते हैं, ताकि उनको कर नहीं देना पड़े जिससे हमारे देश के विकास के लिए पैसों की कमी हो जाती है। इसके कारण हमारे देश के उद्योगपति और बड़े अफसर दोनों भ्रष्टाचारी हो जाते हैं। अधर्म तथा पाप से बिना डरे बेशर्म चरित्र के साथ जीने की मानसिकता का होना। अधिक परिश्रम किये बिना धनार्जन की चाहत।

राष्ट्रभक्ति का अभाव। मानवीय संवेदनाओं की कमी। गरीबी, भूखमरी तथा बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की वजह से। नैतिक मूल्यों में आयी भारी गिरावट के कारण। भौतिक विलासिता में जीने तथा ऐशो-आराम की आदत के कारण। धन को ही सर्वस्व समझने के कारण।

शिक्षा का अभाव होने के कारण गरीब लोग सरकारी योजनाओं का फायदा नहीं उठा पाते हैं क्योंकि वहां के जन प्रतिनिधि उन योजनाओं के बारे में उनको अवगत नहीं कराते हैं और पूरा पैसा स्वंय हजम कर जाते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रष्ट राजनीतिक पार्टियाँ अपना गलत प्रचार करती है और जो काम नहीं भी हुआ होता है उसका भी प्रचार कर देते हैं। देश के कुछ भ्रष्ट नेता हमारे देश के लोगों को भाषा के नाम पर भी राजनीति करते हैं। लोग अपनी भाषा के विवाद के चलते एक दूसरे से लड़ते रहते हैं और इसी का फायदा उठाकर भ्रष्ट नेता नए घोटालों को अंजाम दे देते हैं। जब किसी को अभाव के कारण कष्ट होता है तो वह भ्रष्ट आचरण करने के लिए विवश हो जाता है।

भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव

भ्रष्टाचार के कारण हमारे देश का आर्थिक विकास रुक सा गया है। भ्रष्टाचार के कारण हमारा देश हर प्रकार के क्षेत्र में दूसरे देशों की तुलना में पिछड़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार के कारण ही आज भी हमारे गांव तक बिजली, पानी और सड़क जैसी मूलभूत सुविधाएँ नहीं पहुँच पाई है।

अधिकांश धन कुछ लोगों के पास होने पर गरीब-अमीर की खाई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं का लाभ भ्रष्टाचार के कारण गरीबों तक पहुँच ही नहीं पाता है। भ्रष्टाचार के कारण भाई भतीजावाद को बढ़ावा मिलता है, जिसके कारण अयोग्य लोग भी ऐसे पदों पर विद्यमान रहते हैं। इसके कारण किसानों को उनकी फसल का सही मूल्य नहीं मिल पाता है और वे कर्ज के कारण आत्महत्या करने को मज़बूर हो जाते हैं।

भ्रष्टाचार का रोग सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में इस तरह से फैल गया है कि आम आदमी को अपना कार्य करवाने के लिए बड़े अफसर नेताओं को घूस देनी ही पड़ती है। भ्रष्टाचार के कारण कालाबाजारी को बढ़ावा मिलता है। कम कीमत के सामान को ऊँची कीमत में बेचा जाता है। माफिया लोगों की पहुँच बड़े नेताओं तक होने के कारण वे अवैध धंधे करते हैं, जिसके कारण जन और धन दोनों की बर्बादी होती है।

समाज के विकास के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति ही भ्रष्टाचार में लिप्त होने लग जाता है। बड़े अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करते हुए अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को लाभ पहुंचाते हैं। ऐसे अधिकारी भ्रष्ट लोगों से मिलकर बड़े-बड़े घोटाले करते हैं जिसके कारण पूरा सरकारी तंत्र भ्रष्ट हो जाता है। भ्रष्टाचार के कारण अनेक परियोजनाएँ तो अधूरी रह जाती हैं और सरकारी खजाने का करोड़ों रुपया व्यर्थ चला जाता है।

भ्रष्टाचार के कारण विश्व में हमारे देश की छवि बहुत ही खराब हो चुकी है। इसके कारण कई विदेशी देश हमारे देश के साथ व्यापार नहीं करना चाहते हैं। भ्रष्टाचार के कारण ही हमारे देश में विदेशी लोग आने से घबड़ाते हैं। आए दिन कोई न कोई घोटाला होता रहता है जिसके कारण हमारे राष्ट्र की छवि पूरी तरह से खराब हो रही है। सरकार द्वारा भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कोई सख्त नियम नहीं बनाए जाने के कारण भ्रष्ट लोगों के हौसले दिन प्रति दिन बढ़ते जा रहे हैं जिसके कारण पुरानी वर्षों की अपेक्षा वर्तमान में घोटालों की संख्या बढ़ गई है।

भ्रष्टाचार विरोधी दिवस

दुनिया भर में भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए तथा पूरी दुनिया को भ्रष्टाचार से मुक्त करने के लिए 9 दिसंबर को 'अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस को मनाते हुए सभी सरकारी, प्राइवेट, गैर सरकारी संस्थाएं एवं नागरिक संगठन भ्रष्टाचार के खिलाफ एक जुटता से लड़ाई लड़ने का संकल्प लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 31 अक्टूबर 2003 को एक प्रस्ताव पारित कर 'अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस' मनाए जाने की घोषणा की। यूएनजीए द्वारा यह दिवस प्रत्येक वर्ष 9 दिसंबर को मनाये जाने की घोषणा की गयी। भ्रष्टाचार के खिलाफ संपूर्ण राष्ट्र एवं दुनिया का इस जंग में शामिल होना एक शुभ घटना कही जा सकती है, क्योंकि भ्रष्टाचार आज किसी एक देश की नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्या है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ़ बना अधिनियम

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए हमारे देश में भ्रष्टाचार निवारण

अधिनियम 1988 बनाया गया है। यह अधिनियम भारत के बाहर भारत के सब नागरिकों पर भी लागू है।

इसके तहत कोई भी व्यक्ति जो सरकारी सेवा करता हो, केंद्रीय, प्रांतीय, राज्य, में या कोई भी न्यायाधीश, कोई भी व्यक्ति जो कृषि, उद्योग, बैंक, में हो कोई भी रजिस्टर्ड सोसाइटी, कुलपति, आचार्य, शिक्षक, कर्मचारी, सभी को इस अधिनियम के तहत सजा का प्रावधान है और इसकी सजा निर्धारण करने के लिए विशेष न्यायाधीश नियुक्त किए जाते हैं, ताकि भ्रष्टाचार जैसी बीमारी को हमारे देश से जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया जाए और इस अधिनियम से लोगों के मन में डर बना रहे।

राष्ट्रीय स्तर भ्रष्टाचार के विरुद्ध काम करनेवाले प्रमुख संस्थान: भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रीय स्तर पर तीन प्रमुख संस्थान हैं: लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC), और केंद्रीय जाँच ब्यूरो (CBI)। लोकपाल के गठन से पूर्व ही इसकी स्वतंत्रता पर सवाल उठाए जाते रहे हैं और यह भी स्पष्ट नहीं है कि यह अन्य जाँच एजेंसियों के साथ कैसे काम करेगा ताकि सार्वजनिक जीवन को भ्रष्टाचार मुक्त करने का उद्देश्य संतोषजनक तरीके से हासिल किया जा सके। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिस उद्देश्य के लिये लोकपाल बनाया गया है, उसे बरकरार रखने में CVC और CBI अपनी पूरक भूमिका का निर्वहन किस प्रकार करेंगे।

लोकपाल के अलावा सरकार के पास यह अधिकार है कि वह किसी मामले में प्रारंभिक जाँच का आदेश दे सकती है और CBI को नियमित मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई करने की अनुमति दे सकती है।

यदि कोई लोक सेवक रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा जाता है तो ऐसे मामले में CBI सरकार की अनुमति के बिना मामला दर्ज कर सकती है।

भ्रष्टाचार को रोकने के उपाय

लोकपाल कानून को प्रत्येक राज्य, केन्द्र शासित प्रदेश तथा केन्द्र में अविलम्ब नियुक्त किया जाए जो सीधे राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी हों। उसके कार्य-क्षेत्र में प्रधानमंत्री तक को शामिल किया जाए। हर क्षेत्र में कार्य से पहले व्यक्ति को शपथ दिलाई जाए ताकि वह इस शपथ को हमेशा याद रखें।

निर्वाचन व्यवस्था को और भी आसान तथा कम खर्चीला बनाया जाए ताकि समाज-सेवा तथा लोक कल्याण से जुड़े लोग भी चुनावों में भाग ले सकें। प्रशासनिक मामलों में जनता को भी शामिल किया जाए। प्रशासनिक कार्य के लिए लोकपाल स्वतंत्र रूप से कार्य करें।

कानून और सरकार से लोगों की मानसिकता बदलना जरूरी है। सही समय पर सही वेतन बढ़ाया जाए। सरकारी कार्यालय में जरूरत के हिसाब से कर्मचारी हो, कम ना हो। भ्रष्टाचार का विरोध भी इसे रोकने में काफी कारगर सिद्ध होगा। भ्रष्टाचार का अपराधी चाहे कोई भी व्यक्ति हो, उसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाए। कानून संक्षिप्त और कारगर हो, लचीला न होकर कठोर हो।

अगर हमें भ्रष्टाचार से मुक्त देश चाहिए तो हमें लोगों को भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक करना होगा। ग्रामीण इलाकों के लोगों को तो पता ही नहीं चलता कि उनके साथ कब कोई बेईमानी कर गया। इसलिए हमें गांव-गांव जाकर लोगों को भ्रष्टाचार के बढ़ते हुए जाल के बारे में बताना होगा।

जब भी कोई सरकारी टेंडर या सरकारी भर्तियां निकलती है तो बड़े नेता और अफ्सर लोग अपने रिश्तेदारों को बिना किसी क्वालिफिकेशन के नौकरी या टेंडर दे देते हैं जिसके कारण हमारे देश की अर्थव्यवस्था ऐसे लोगों के हाथ में चली जाती है जिनको उसके बारे में कुछ पता ही नहीं होता है। सरकार को इसके ऊपर नियम ला कर कड़े कानून बनाने चाहिए और भाई भतीजावाद पर रोक लगानी चाहिए।

शिक्षा के अभाव के कारण ही लोग अच्छा जन प्रतिनिधि नहीं चुन पाते हैं, जिसके कारण उन्हें रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार जैसी बीमारियों से जूझना पड़ता है। हमारे इलेक्शन कमिशन को भ्रष्टाचारी नेताओं को चुनाव नहीं लड़ने देना चाहिए। लेकिन नियमों की ढील के कारण भ्रष्टाचारी नेता भी चुनाव लड़ते हैं। हमें किसी भी गलत चीज के प्रति विरोध करने की आदत डालनी होगी। जब तक हम विरोध नहीं करेंगे, तब तक भ्रष्टाचार ऐसे ही फैलता रहेगा।

हमें हर एक धोखाधड़ी की सूचना भ्रष्टाचार निरोधक विभाग को देनी होगी क्योंकि पहले व्यक्ति छोटी रिश्वतखोरी करता है और फिर उसका लालच बढ़ता जाता है और वह बड़े-बड़े घोटालों को अंजाम देने लग जाता है। हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा क्योंकि आधे से ज्यादा भ्रष्टाचार तो हमें हमारे अधिकार नहीं पता होने के कारण ही हो जाते हैं।

उपसंहार

आज भ्रष्टाचार हमारे देश भारत में पूरी तरह से फ़ैल चुका है। भारत में आज लगभग सभी प्रकार के आईटी कंपनियाँ, बड़े कार्यालय, अच्छी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भी, भारत पूरी तरीके से विकसित होने की दौड़ में बहुत पीछे है। इसका सबसे बड़ा कारण भ्रष्टाचार ही तो है। चाहे वह समाज का कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, सरकारी कर्मचारी हो या कोई राजनीतिक नेता, शिक्षा का कार्यक्षेत्र हो - हर जगह भ्रष्टाचार ने अपना घर बना लिया है।आज भ्रष्टाचार कुछ इस प्रकार से भारत में बढ़ चुका है कि कहीं-कहीं तो भ्रष्टाचार के बिना काम ही नहीं होता है।

भारत जैसे विकासशील और लोकतांत्रिक देश में भ्रष्टाचार का होना एक बहुत ही बड़ी विडंबना है। हमारा राष्ट्रीय चरित्र धूमिल होता नजर आ रहा है, जो कि हमारे देश पर कीचड़ उछालने से कम

नहीं है। हमारा नैतिक स्तर इतना गिर गया है कि हम अन्य लोगों के बारे में जरा भी नहीं सोचते हैं।

हमारा देश सत्य, अहिंसा, कर्मठ, शीलता, और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता था, लेकिन आज 21वीं सदी के भारत में यह सब चीजें देखने को नहीं मिलती है। जिसके कारण हमारा देश कहीं ना कहीं अपनी मूल छवि को खोता जा रहा है। भ्रष्टाचार का कैंसर हमारे देश के स्वास्थ्य को नष्ट कर रहा है। यह आतंकवाद से भी बड़ा खतरा बना हुआ है।

अगर हमें भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करना है तो राजनेताओं, सरकारी तंत्र और जनता के साथ मिलकर इसके खिलाफ लड़ना होगा, तभी इस भ्रष्टाचार रूपी दानव से हम अपने देश को बचा सकते हैं। ❑

स्वास्थ्य तथा सेहत

✍ **प्रिया डागा**
आश्रित - अभिषेक डागा, उप-मुख्य अभियंता (सू. प्रौ.)
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, दुलियाजान

आज के अर्थ प्रधान युग में हम ये भूलते जा रहे हैं कि स्वास्थ्य तथा सेहत हमारे जीवन में कितना महत्व रखता है। हमने बहुत बार अपने आस-पास समाज में देखा होगा कि एक व्यक्ति इतना धन तथा ऐश्वर्य संपन्न होता है कि उसको जीवन पर्यन्त रोटी की कोई कमी नहीं होगी। लेकिन जब भी वह भोजन करने के लिये बैठता है तो उसे खान पान में हजारों परहेज - जैसे कम पानी पीना, मिठाई का सेवन नहीं कर सकते, घी-तेल नहीं खा सकते, इत्यादि - करने पड़ रहे हैं। जबकि पानी तो हमारे शरीर की मूलभूत आवश्यकता है, हमारा शरीर में 70% पानी है इसलिये हमें अर्थ प्रधान युग में अर्थ अर्जन करने में ये नहीं भूलना चाहिये कि स्वास्थ्य एवं सेहत भी हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है।

अनेक ज्ञानी, महापुरुषों, एवं गुरुजनों ने कहा है "पहला सुख निरोगी काया फिर धन और माया"। "Health is Wealth"एक गुरुमंत्र है जो युगों-युगों से चलता आ रहा है और जो आज के समय में और अधिक वैध है। यदि हम स्वस्थ हैं तो ही अपना जीवन है, अस्वस्थ काया में जीवन नहीं होता।

मुख्यतः मनुष्य 4 कारणों से अस्वस्थ होता है: पहला तो मौसम और वातावरण से, दूसरा खाने पीने से, तीसरा चिंता अथवा क्रोध से और चौथा अनिद्रा से। आज के युग में हमें इन सभी कारणों से बचते हुए अपने स्वास्थ्य के प्रति सजगता की ओर कुछ कदम बढ़ाना होगा। हम स्वस्थ जीवन शैली को अपना कर स्वस्थ शरीर के धनी बन सकते हैं।

स्वास्थ्य सुखी जीवन का मंत्र

जीवन शैली	पौष्टिक आहार	शारीरिक गतिविधियां
शुभ संकल्प मन, विचारों पर नियंत्रण, व्यस्त रहना, संतोष रखना, मिलनसार एवं सकारात्मक मनोदृष्टि हिंसा रहित समाज निर्माण	अंकुरित अनाज, दालें, दूध, दही, छाछ, इत्यादि फल, सब्जी, अंडा पेय पदार्थ, रेशेदार आहार गरिष्ठ रहित खाना	सूर्य नमस्कार, प्रातःकाल सैर,व्यायाम करना, योग एवं ध्यान करना, प्राणायाम करना

ये सच है,"जैसा खाये अन्न, वैसा होये मन" अर्थात मनुष्य के खान पान का असर हमारे मन, हमारे आचरण पर पड़ता है। अत: हमें अच्छे स्वास्थ्य के लिये संतुलित आहार लेना चाहिये, जिससे सकारात्मक विचार उत्पन्न होंगे। संतुलित आहार के साथ-साथ शारीरिक गतिविधियों (ध्यान, योग, प्राणायाम, इत्यादि) को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं जिससे हम स्वस्थ रहें , मस्त रहें , तंदुरुस्त रहें। ❑

" हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है। "

- सुमित्रानंदन पंत

मानो या ना मानो

✍स्वाती कुमारी
अधीक्षण अभियंता (कूप संलेखन)
निगमित कार्यालय

आइए आज आपको एक बड़ा ही मजेदार दृष्टांत सुनाती हूँ। वैसे तो हम सब सोचते हैं कि हम खुद कमाते हैं और खाते हैं। पर यह सच है कि जगत का पालनहार ही हमें खाना देता है और यदि हमारे नसीब में खाना नहीं हो तो हमारे मुँह तक आया हुआ निवाला भी गिर जाता है या खाने बैठो तो कोई मेहमान या माँगनेवाला आ जाता है और खाना सामने होने पर भी हम खा नहीं सकते ।।

इसी संदर्भ में एक सच्ची घटना को संवाद रूप में बताने जा रही हूँ। यह घटना संत मालुकदास की असली कहानी है जो कि पहले सेठ मालुकदास थे। उनकी समाधी पूरी में है और उन्होंने लिखा है:__
अजगर करे ना चाकरी,

पंछी करे ना काम, दास मालुक कह गए,

सबके दाता राम ....."

सेठजी एक नगर में रहते थे। उनके घर के नजदीक एक मंदिर था। एक रात्रि को पुजारी के कीर्तन की ध्वनि के कारण उन्हें ठीक से नींद नहीं आयी। सुबह उन्होंने पुजारी को खूब डाँटा कि यह सब क्या है?

पुजारी: एकादशी का जागरण कीर्तन चल रहा था।

सेठजी : जागरण कीर्तन करते हो तो क्या हमारी नींद खराब करोगे। अच्छी नींद के बाद ही व्यक्ति काम करने के लिए तैयार हो पाता है, फिर कमाता है, तब खाता है।

पुजारी: सेठजी खिलाता तो वह खिलानेवाला ही है।

सेठजी: कौन खिलाता है ? क्या तुम्हारा पालनहार खिलाने आएगा?

पुजारी: हाँ वही तो खिलाता है।

सेठजी: क्या पालनहार-पालनहार लगा रखा है। हम कमाते हैं तभी तो खाते हैं। यदि हम कुछ काम न करें, बैठे रहें तो क्या वह खिलाने आएगा ?

पुजारी: हाँ

सेठजी: हम नहीं खाते उसका। खुद की मेहनत का खाते हैं। हमें उसका दिया हुआ नहीं खाना है।

पुजारी: नहीं खाओगे तो मार कर भी खिलाता है।

सेठजी : पुजारी जी ! अगर तुम्हारा पालनहार मुझे 24 घंटों में नहीं खिला पाया तो फिर तुम्हें अपना यह भजन-कीर्तन सदा के लिए बंद करना होगा।

पुजारी : मैं जानता हूँ कि तुम्हारी पहुँच बहुत ऊपर तक है, लेकिन पालनहार के हाथ बड़े लम्बे हैं, जब तक वह नहीं चाहता, तब तक किसी का बाल भी बाँका नहीं हो सकता, आजमाकर देख लेना.....

पुजारी की निष्ठा परखने के लिए सेठजी घोर जंगल में चले गए और एक विशालकाय वृक्ष की ऊँची डाल पर यह सोच कर बैठ गए कि अब देखता हूँ इधर कौन खिलाने आता है। 24 घंटे बीत जाएंगे और पुजारी की हार हो जाएगी। सदा के लिए कीर्तन की झंझट मिट जाएगी।

तभी एक अजनबी आदमी वहाँ आया.... उसने उसी वृक्ष के नीचे आराम किया और फिर अपना सामान उठाकर चल दिया। लेकिन अपना एक थैला वहीं भूल गया।

भूल गया या छोड़ गया, ये भगवान ही जानें.....

थोड़ी देर बाद पाँच डकैत वहाँ पहुंचे, उसमें से एक ने अपने सरदार से कहा, उस्ताद यहाँ कोई थैला पड़ा है। जब उन्होंने खोलकर देखा तो देखा कि गरमागरम खाना है। उसकी बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी तभी एक ने कहा कि यहाँ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा है, किसी ने जहर मिलाकर हमको पकड़वाने के लिए यहाँ पर गरमागरम खाना में जहर मिलाकर रख दिया होगा। या फिर पुलिस का कोई षडयंत्र होगा, जरा देखो आसपास कौन है ?

उन्होंने इधर-उधर देखा तो कोई नहीं मिला। ऊपर सेठजी सोच रहे थे कि यदि कुछ बोलूं तो ये मुझे ही मारेंगे। वो चुपचाप बैठे थे, तभी एक डकैत की नजर उन पर गई और सबने उनके उपर ही शक किया और नीचे उतरने बोला फिर सेठजी ने सारी बात बताई पर डकैत नहीं माने और कहने लगे कि तुमने ही यह खाना यहां रखा है। तुम्हें यह खाना खाना ही होगा। सेठजी नहीं माने तो डाकुओं ने उनको मारना-पीटना शुरू कर दिया और जबरदस्ती उनके मुँह में खाना डाल दिया।

अब सेठजी को पुजारी जी की बात याद आ रही थी कि भगवान मार - मार कर भी खाना खिलाते हैं और प्रारब्ध में न रहने पर सामने पड़ा गरमा-गरम खाना भी हम नहीं खा सकते हैं।

यह एक सच्ची घटना है पर फिर भी यह हमारे ऊपर है कि हम इसे माने या ना माने पर हम सबने इसको अपने जीवन में जाने -अनजाने अनुभव किया है। इसलिए यह सच है कि पालनहार ही हमें खिलाता है। ❑

ईमानदारी- एक जीवन शैली

✍ **अंजना राजपूत**
आश्रित - कमलजीत राजपूत
महाप्रबंधक (वेधन परियोजना)
वेधन सेवाएँ विभाग, दुलियाजान

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन जीने का तरीका भिन्न होता है तभी तो कोई एक कथन/कार्य किसी को अच्छा तो किसी को बुरा लगता है। ईमानदारी वह सर्वश्रेष्ठ नीति है जो साधारण मनुष्य को भी महान बनाने का सामर्थ्य रखती है और जीवन में सत्य के पथ पर चलने को प्रेरित करती है। इतिहास गवाह है आजतक जो व्यक्ति इस राह पर चले, सफलता ही हासिल की। जैसे- महात्मा गांधी, डॉ अब्दुल कलाम आदि।

हमें अपने जीवन में ईमानदारी को आत्मसात कर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। ईमानदारी और विश्वास दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। हम इसके द्वारा ही दूसरों का विश्वास जीत सकते हैं। ईमानदारी से परस्पर रिश्तों की डोर मजबूत होती है। यदि हम छल-कपट करेगें तो हमें कोई भी पसंद नहीं करेगा और हमारा घर, संसार और व्यापार कभी भी सफल नहीं हो पायेगा। हमें अपने नैतिक मूल्यों को हमेशा कसौटी पर खरा रखना चाहिए। हमेशा सही मार्ग चुनना चाहिए। चाहे हमें कोई देखे या ना देखे हमेशा सही कार्य पूरा मन लगाकर करना चाहिए| उन्नति हमें हमेशा अच्छा भविष्य और दौलत देती है पर यह भी जरूरी है कि वह हमें आत्म-संतुष्टि और आत्मशान्ति भी दें। जीवन में सभी को उच्च मानकों को अपनाना चाहिए। हम संसार में अपने कर्मों द्वारा ही पहचाने जाते हैं। हमारा काम हमारा प्रतिनिधित्व करता है। बच्चों में ईमानदारी के बीज बचपन से ही बोने चाहिए जिससे वह देश के सफल नागरिक बन सकें।

किसी भी देश की सफलता उसके नागरिकों पर निर्भर रहती है, अतः हमें ईमानदारी से परिपूर्ण जीवन शैली अपनानी चाहिए। ईमानदारी के बिना हम उस जंगली जानवर के समान है जो भूख लगने पर अच्छा-बुरा कुछ नहीं सोचते केवल अपनी क्षुधा शान्त करते हैं। हम सब को यह प्रण लेना चाहिए कि -

'मेरा मन मेरा मंदिर है:
मैं किसी को भी
अपने गंदे पाँव के साथ
मेरे मन से नहीं गुजरने दूंगा।'

- महात्मा गांधी ❑

राजभाषा हिन्दी और उसका उत्कर्ष

✍ **स्नेहा कुमारी**
वरिष्ठ भूभौतिकीविद
भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

राजभाषा, किसी राज्य या देश की घोषित भाषा होती है जो कि सभी राजकीय प्रयोजनों में प्रयोग होती है। उदाहरणतः

भारत की राजभाषा हिन्दी है। केन्द्रीय स्तर पर दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है।

हिन्दी शब्द का प्रयोग फारसी और अरबी से जाना जाता है। वास्तव में संस्कृत शब्द सिंधु से 'हिंदी' शब्द उद्भूत हुआ है। यह सिंध नदी के आसपास की भूमि के नाम हैं। ईरानी में 'स' का उच्चारण 'ह' होता है। इसलिए सिंधु का रूप हिन्दू हो गया तथा 'हिन्द' शब्द पूरे भारत के लिए प्रयुक्त होने लगा और हिंदू राष्ट्र अस्तित्व में आया।

हिन्दी का स्वरूप शैरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुआ है। 1000 ई. के आसपास इसकी स्वतंत्रता सत्ता का परिचय मिलने लगा था। हिन्दी भाषा के लिए हिंदवी, भारवा, दस्विनी, हिन्दुस्तानी, उर्दू आदि नाम दिए गये। यूरोप के लोगों ने भी 17वीं शताब्दी में 'हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग हिन्दी के लिए किया है। बाद में चलकर गांधीजी ने उर्दू, फारसी एवं संस्कृत शब्दों से मिली-जुली हिन्दी को हिन्दुस्तानी कहा गया। खड़ी बोली हिन्दी का दूसरा रूप है जो तुगलक और मुगल आक्रमणकारियों के माध्यम से दक्षिण में पहुंचा था।

यह वही खड़ी बोली है जो दक्षिण में साहित्य रचना के लिए प्रयुक्त हुई थी। आज की हिन्दी खड़ी बोली का ही विकसित रूप है, जो जनभाषा के रूप में होने लगा था।

19वीं शताब्दी तक शासकों, सैनिकों, व्यापारियों, तीर्थयात्रियों भक्तों आदि के माध्यम से देश के व्यापक क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रचलन हो चुका था। स्वतंत्रता संग्राम जनसाधारण द्वारा एक विशाल साम्राज्य के विरुद्ध लड़ी गई लड़ाई है। स्वतंत्रता संग्राम

के दौरान हिन्दी की राष्ट्रव्यापी रूप होने तथा उसी राष्ट्रभाषा के गौरवमयी पद पर आसीन करने के लिए महात्मा गांधी ने अथक प्रयास किये एवं उनका योगदान इस क्षेत्र में सर्वोपरि है।

भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ और 1950 में गणतंत्र बना। इस गणतंत्र का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। संविधान का यह उल्लेख था कि हिन्दी जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इस देश की राजभाषा है, लेकिन राजभाषा के कार्यों के निर्वाह में हिन्दी भाषा की तैयारी को देखते हुए यह उल्लेख भी किया गया था कि अंग्रेजी 1965 तक राजभाषा के रूप में काम आती रहेगी और इस अवधि में हिन्दी भाषा में साहित्य निर्माण के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में उसके प्रयोग के प्रयत्न किए जाते रहेंगे।

राजभाषा का प्रयोग मुख्यतः चार क्षेत्रों में होता है - शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका। ❑

भोजन का नियमः अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी

✍ **निपन शेनसोवा**
वरिष्ठ सहायक, सामग्री विभाग
दुलियाजान

अच्छे स्वास्थ्य के बिना मानव जीवन दुखी हो जाता है। अगर सेहत ठीक नहीं है, तो पैसा भी बेकार हो जाता है। आधुनिक जीवन शैली और अविवेकी भोजन का सेवन मानव जीवन लाइलाज रोगों और कष्टों से भर देते हैं। वर्तमान में, ऑयल इंडिया लिमिटेड के अधिकांश कर्मचारी अनियमित खान-पान के कारण विभिन्न बीमारियों से पीड़ित हैं। खान-पान की आदतों में थोड़ा बदलाव करके कई असाध्य रोगों से छुटकारा पा सकते हैं। हम अपने आहार और कुछ सामान्य नियमों का पालन करके अपने आप को कई बीमारियों से बचा सकते हैं।

खुद को स्वस्थ रखने के लिए पारंपरिक भारतीय आयुर्वेदिक नियमों का कुछ हद तक पालन करना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आज की तेजी से भागती दुनिया में, भोजन और जीवन शैली के सभी नियमों का अच्छी तरह से पालन करना मुश्किल है। लेकिन आयुर्वेद में सही तरीके से भोजन का सेवन करके अच्छे स्वास्थ्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इस पर सुंदर और विस्तृत वर्णन हैं। आयुर्वेद ने भोजन से अधिकतम लाभ प्राप्त करने और इसे ठीक से पचाने के लिए भोजन तैयार करने, परोसने और उपभोग करने के नियमों का सुंदर वर्णन किया है। ऐसे नियम नीचे संक्षेप में प्रस्तुत किए गए हैं।

सही तापमान का भोजन

खाना तैयार करने के बाद इसे गर्म ही खाना चाहिए। ऐसा करने से पाचन जठराग्नि बढ़ जाती है और पाचन प्रक्रिया को समय पर पूरा करने में मदद मिलती है। लेकिन बहुत अधिक गर्म भोजन करना भी हानिकारक है। इससे शरीर में दर्द, अत्यधिक पसीना, शारीरिक कमजोरी और कुछ मानसिक अस्थिरता हो सकती है। दूसरी ओर, बहुत अधिक ठंडा भोजन भूख, कब्ज और मतली के नुकसान का कारण बन सकता है।

नरम खाद्य पदार्थ खाना

नरम भोजन जठराग्नि से आसानी से पच जाता है और ताकत, रंग और भावना शक्ति को बढ़ाता है। यह उम्र बढ़ने से रोकता है। नरम भोजन का मतलब सिर्फ तैलीय या चिकना भोजन नहीं है। नरम उत्पादों में गेहूं, चावल आदि भी शामिल हैं। लेकिन बहुत नरम या बहुत शुष्क पदार्थ पाचन प्रक्रिया को बाधित कर सकते हैं। शीतल खाद्य पदार्थों में भूख न लगना, थकान जैसी समस्याएं आम हैं। दूसरी ओर, बहुत अधिक सूखे भोजन से गठिया, रूसी, खुरदरी त्वचा और कब्ज हो सकता है।

भोजन की सही मात्रा प्राप्त करना

खाना हमेशा इतनी मात्रा में खाना चाहिए कि व्यक्ति को पेट में कोई असुविधा महसूस न हो। ऐसा महसूस न हो कि शरीर अधिक भारी हो गया है, उठने बैठने में - चलने में कोई कठिनाई महसूस न हो तथा भूख-प्यास को खत्म करें। बेशक, भोजन की सही मात्रा हर एक व्यक्ति के लिए अलग होता है।

पहले खाया हुआ खाना पचने के बाद भोजन करना

भोजन करने से पहले, यह मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है कि पहले खाया गया भोजन ठीक से पचा है या नहीं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अपच की स्थिति में, पुनः भोजन करने से अवशिष्ट भोजन जो पहले से शरीर में जमा हुआ है, शरीर को Rheumatic दर्द, पित्त आदि से दूषित करता है और रोग का कारण बनता है। बिना गंध के साफ मुंह, शरीर में उत्तेजना और हल्कापन महसूस होना, मल और मूत्र का तेजी से प्रवाह, नियमित भोजन के समय पर भूख लगना आदि खाना सटीक रुप से पचने का लक्षण है।

भोजन की पौष्टिकता के अनुसार भोजन करना

विभिन्न खाद्य पदार्थों के अपने रस, गुण, वीर्य होते हैं और उनकी पाचन प्रक्रिया और पाचन समय भी अलग होती है। इस हिसाब से उनकी अपनी खूबियां हैं। सामान्य तौर पर, भोजन का वीर्य इसकी कार्यशक्ति है। कभी-कभी कई ठोस पदार्थों को मिलाकर भोजन तैयार किया जाता है और ताजे तैयार भोजन की गुणवत्ता एकल भोजन से पूरी तरह अलग होती है और कभी-कभी यह शरीर के

लिए हानिकारक होती है।

उदाहरण के लिए, अलग से लिया गया घी और शहद शरीर के लिए बहुत अच्छे होते हैं। लेकिन अगर दोनों को समान मात्रा में मिलाया जाए तो यह जहरीला हो जाता है और शरीर के लिए हानिकारक माना जाता है। इसी तरह दूध और मछली को कभी भी एक साथ नहीं लेना चाहिए। हमें हमेशा कुछ गलत खाने की आदतों से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए, शहद को गर्म या गर्म भोजन के साथ नहीं खाना चाहिए। शहद खाने के तुरंत बाद गर्म पानी न पिएं। कड़वे रस गर्मियों में और सर्दियों में प्रमुख होते हैं। रात में दही न खाएं। भोजन की शुरुआत में कड़वे और कड़वे रस को मुख्य भोजन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। इस प्रकार, भोजन के अंत में शहद के रस को मुख्य भोजन के रूप में नहीं खाना चाहिए। फलों का सलाद और दूध या केला एक साथ नहीं खाना चाहिए। गर्म चाय या कॉफी पीने के तुरंत बाद ठंडा पानी न पिएं।

केवल स्वाद के लिए तैयार किए बिना गुणवत्ता को खराब किए बिना भोजन तैयार करना बेहतर है।

मन के अनुकूल वातावरण और उपकरण

भोजन क्षेत्र (खाने की मेज के साथ जगह) हमेशा स्वच्छ और रोगाणु मुक्त होना चाहिए। कभी भी ऐसी जगह पर खाना न खाएं जहां दर्द, भय, चिंता, शोक आदि पैदा कर सके। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद में, यह उल्लेख है कि लोगों को पेड़ के नीचे, बिस्तर पर, गर्म उजला स्थान पर, अंधेरी जगह में भोजन नहीं करना चाहिए। इस तरह के कारकों का निश्चित रूप से मानसिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

भोजन परोसते समय कुछ चीजों का अनुकरण करने में सक्षम होना अच्छा है। कुछ खाद्य उत्पादों के विपरीत कुछ कंटेनरों का उपयोग बेहतर परिणाम दे सकता है। उदाहरण के लिए, घी को एक कंटेनर में रखा जाना चाहिए। फलया कच्चे खाने वाले हरी सब्जी, केले के पत्ते या धातु के पत्तों पर लेना चाहिए। इस तरह शरीर में उपयोगी पदार्थों का उत्पादन करने के लिए भोजन और बर्तनों की सामग्री के बीच रासायनिक प्रतिक्रियाएं होती हैं और तुरंत खराब नहीं होती हैं। दूसरी ओर, मसालेदार भोजन को कभी भी तांबे के कंटेनर में नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह रासायनिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से विषाक्त पदार्थों का कारण बन सकता है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

पंडित सुश्रुत के अनुसार, किचन हमेशा विशाल और अच्छी तरह हवादार और हवा से युक्त होना चाहिए। भोजन को हमेशा अजनबियों द्वारा देखे बिना कसकर कवर किया जाना चाहिए।

वास्तव में, हमारे पाचन तंत्र और मस्तिष्क के बीच एक सीधा संबंध है। तनाव आमतौर पर मस्तिष्क से पेट और अन्नप्रणाली तक सामान्य संकेतों के अपवाद का कारण बनता है। इससे नाराज़गी और अन्य लक्षण दिखाई देते हैं। जब यह तनाव का स्तर बहुत अधिक होता है, तो कुछ रसायनों को आंतों के मार्ग में छोड़ दिया जाता है और नली से बाहर निकल जाता है। नतीजतन, शरीर भोजन से आवश्यक पोषक तत्वों को अवशोषित करने में असमर्थ है और कुपोषण के विभिन्न रोगों से ग्रस्त है।

बिना जल्द-बाजी के भोजन

भोजन हमेशा संयम से खाना चाहिए। नहीं तो अन्नप्रणाली के बजाय खाया गया भोजन श्वसन पथ में घुसने से खतरनाक हो सकता है। आयुर्वेद में उल्लेख है कि खांसी के कारणों में से एक खाद्य विमर्गमण भी हैं। इस तरह से खाए गए भोजन का स्वाद, गंध और गुणवत्ता अच्छी तरह से समझ में नहीं आती है और मात्रा में हेरफेर होता है। परिणाम स्वरूप, पहले से उल्लेखित मानसिक संतुष्टि की कमी और गठिया जैसे दोषों और अन्त्राषय कि आग विकृत होती है। आमतौर पर ध्यान से नहीं खाने से हमेशा बड़ी मात्रा में खाया जाता है। जब हम खाते हैं, हम अपनी आंतों में हार्मोन स्रावित करते हैं जो हमारे पेट को भरा हुआ महसूस कराते हैं। इस तरह इनमें से कुछ हार्मोन कम स्रावित होते हैं। इससे हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन की मात्रा बढ़ जाती है जो हमारे स्वास्थ के लिए बुरा है।

बहुत धीरे धीरे नहीं खाना

खाना बहुत धीरे धीरे नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने से खाना ठंडा हो जाता है। नतीजतन, पाचन प्रक्रिया बाधित होती है। इस तरह से खाना खाने से कभी-कभी ज्यादा खाना पेट में जाता है और अन्त्राषय रोग से पीड़ित होते हैं।

एकाग्रता के साथ भोजन करना

भोजन करते समय, हमेशा भोजन पर ध्यान दें और श्रद्धा और संतुष्टि के साथ खाएं। कभी बात करके, हंसी मजाक से खाना खाना नहीं चाहिए। आजकल टीवी देखने या मोबाइल फोन की स्क्रीन पर नजर रखने की आदत शुरू हो गई है। ऐसा करना उचित नहीं है। अन्यथा भोजन का पाचन, पाचन अग्नि से बाधित होता है और पाचन रस के स्राव में असंतुलन से शारीरिक बीमारी होती है। इसके अलावा, यह कभी-कभी भोजन के टुकड़ों को वायुमार्ग में जाने और अवांछित खतरे का कारण बन सकता है।

वास्तव में, पाचन तंत्र एक ऐसी प्रक्रिया है जो पूरी तरह से शारीरिक और मानसिक स्थिति पर निर्भर करती है। इसलिए, मानसिक स्वास्थ्य पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है। अब, अपने आप से पूछें, क्या हम खाने के उपरोक्त नियमों का पालन करते हैं? जबकि ये नियम साधारण लग सकते हैं, उनके गुण असाधारण हैं। ये साधारण सा लगने वाले नियमों को पालन करके बहुत सारे बीमारियों से मुक्त हो सकते हैं। ❑

कहीं देर ना हो जाये

✍ **संगीता अग्रवाल**
आश्रित - अजय कुमार अग्रवाल
उप महाप्रबंधक (एफ एस), सुरक्षा एवं पर्यावरण विभाग
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

जितेन्द्रिय दास का जन्म जबलपुर के निकट पाण्डिल्यनगर के एक सभ्रांत परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता सभ्य, सुशील व अत्यंत ही व्यवहार कुशल दम्पत्ति थे। उन्होंने अपने इकलौते पुत्र के लालन-पालन में भी किसी भी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी। उनका चाल-चलन व शिक्षा बड़ा ही परिष्कृत था। कालांतर में वे एक आकर्षक व्यक्तित्व वाले नवयुवक बन कर उभरे व उच्च शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त निजी व्यवसाय करने के उद्देश्य से बम्बई जाकर बस गए। अनुकूल समय पर कुलीन व सुशील गायत्री नामक गौर वर्ण कन्या से परिणय सूत्र में बंधे। वे अपना कपड़े का व्यवसाय बड़ी ही लगन, मेहनत व उत्साह के साथ करते। सभी कर्मचारियों को भी आत्मीय सम्मान देते। इस तरह उनका उद्योग दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता रहा।

दो-दो वर्ष के अन्तराल पर उन्हें तीन पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई, जिनके नाम राहुल, प्रभात व प्रशान्त थे। तीनों पुत्र भी अपने पिता समान ही प्रखर बुद्धि व मानवीय गुणों की खान थे। करुणा, प्रेम, विनम्रता, दया तो तीनों में ही कूट - कूट कर भरे थे। तीनों ने बम्बई के जाने - माने शिक्षण संस्थानों से उच्च शिक्षा प्राप्त की और अपने पिताजी के व्यवसाय में हाथ बटाने लगे। फलस्वरूप उनका व्यवसाय और विस्तारित होने लगा। जितेन्द्रिय दास व तीनों पुत्र अपना अधिकांश समय व्यवसाय की उन्नति व प्रगति के कार्यों में ही व्यय करते।

जितेन्द्रिय दास अब अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके थे। वे अपना सम्पूर्ण समय व्यवसाय में ही व्यतीत करते, जिसकी कि अब उन्हें आवश्यकता नहीं थी, कारण तीनों ही पुत्र अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभा रहे थे और परिणामस्वरूप सफलता के नये-नये अध्याय लिखे जा रहे थे। अत: उनके पुत्रों ने विचार किया कि पिताजी को अब परमार्थिक कार्यों में लगकर अपना परलोक संवारना चाहिए। इस उद्देश्य से वे पिताजी को तीर्थाटन पर ले जाने हेतु बम्बई से रवाना हुए। वे श्री बद्रीनारायण, हरिद्वार, उज्जैन, मथुरा, जगन्नाथ पुरी आदि अति पावन स्थलों में गए। पुत्रों सहित जितेन्द्रिय दास सभी पवित्र क्षेत्रों के दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्नचित्त थे। वे असीम आनन्द का अनुभव कर रहे थे। सभी रमणीय स्थलों की भूरि - भूरि प्रशंसा करते। पुत्रों को अपने पिताजी में किसी प्रकार के आत्मबोध अथवा सांसारिक विरक्ति के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए, जिस उद्देश्य से वे तीर्थ भ्रमण के लिए आए थे।

अन्त में वे काशी नगरी में दशाश्वमेध घाट पहुंचे। वहाँ माँ गंगा के पावन जल में स्नान किया, काशी मंदिर में भगवान शिव के दर्शन किए, माँ गंगा की आरती के उपरान्त मणिकर्णिका घाट पर आकर कुछ समय गंगाजी के सानिध्य में बिताने का विचार किया। वहाँ पंक्तिबद्ध अनेकों चिताएँ देखकर वे स्तब्ध रह गए। "यह कैसा संसार है', ऐसा तीनों पुत्र चिन्तन कर रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि उनके परम पूज्य पिताजी के नेत्रों से अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही है, वे विह्वल हो रहे हैं। पुत्रों ने सोचा 'पिताजी को जीवन की क्षण-भंगुरता का बोध हो गया है। उनकी तीर्थयात्रा का उद्देश्य पूरा हो गया सा लगता था। अतः वे सभी अपने बम्बई स्थित आवास पर लौट आए। घर पहुंच कर तीन पुत्रों ने बड़े ही विनीत भाव से, जितेन्द्रिय दास से उनके गंगा-तट पर भाव विभोर होने का कारण जानने की जिज्ञासा प्रकट की, तो वे बोले, मैंने व्यर्थ ही सम्पूर्ण जीवन श्रम करते-करते वस्त्र उद्योग में गँवा दिया। अरे मणिकर्णिका घाट पर जाकर बोध हुआ कि सबसे अधिक लाभकारी-धंधा तो काष्ठ का है जो अंतिम संस्कार में, प्रतिदिन इतनी अधिक मात्रा में, प्रत्येक ग्राम- नगर में बेची जाती है।" और वे निराश भाव से बैठ गए।

ऐसा उत्तर पाकर तो तीन पुत्र ठगे से रह गए। उनके प्रयास निष्फल हो चुके थे। जितेन्द्रिय दास अभी भी सांसारिक मायाजाल के चंगुल में ही पूर्ण रूपेण बन्दी थे।

हमें आत्मज्ञान, परमार्थिक उन्नति, आत्मतत्त्व की उपलब्धि हेतु तरुण अवस्था से ही सजग व प्रयासरत रहना चाहिए। अपनी प्रकृति, मानसिक स्थिति हम वृद्धावस्था में नहीं बदल सकते। जीवन भर जिसमें मन-बुद्धि निर्लिप्त रहते हैं, बाद में उन्हें वहाँ से हटाना अत्यंत दुष्कर ही नहीं' - असंभव होता है। ❑

" भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी "

- रविन्द्र नाथ ठाकुर

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति, भूमिका और उनकी सुरक्षा के प्रति हमारा दायित्व

✍ऋतुराज बोरा
वरिष्ठ सहायक
सामग्री विभाग, दुलियाजान

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुदंर समतल में ।।"
- जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना- प्राचीन युग से ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है । हमारी धारणा रही है कि देव शक्तियां वहीं पर निवास करती हैं जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी लक्ष्मी का दर्जा दिया गया है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करें तो महिलाएं हर कार्यक्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं चाहे वो राजनीति, बैंक, विद्यालय, खेल, पुलिस, रक्षा क्षेत्र, खुद का कारोबार हो या आसमान में उड़ने की अभिलाषा हो। यह बात तो सौ प्रतिशत सच है कि भारतीय समाज में महिला को देवी लक्ष्मी के समान पूजा जाता है। पर महिलाओं के प्रति नकारात्मक पहलू को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारत में गुजरते एक-एक पल में महिला का हर स्वरूप शोषित हो रहा है फिर चाहे वो माँ हो, बेटी हो, बहन हो, पत्नी हो या 5-7 साल की छोटी बच्ची ही क्यों न हो।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और भूमिका- हम सभी जानते हैं कि हमारा देश हिंदुस्तान पूरे विश्व में अपनी अलग रीति रिवाज़ तथा संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। भारत में प्राचीन काल से ही यह परंपरा रही है कि यहाँ महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है। भारत वह देश है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा और इज्ज़त का खास ख्याल रखा जाता है। आधुनिक युग में महिला पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी हैं। वे राष्ट्रपति के दफ्तर से लेकर जिला स्तर की योजनाओं का आधार बन चुकी है। महिलाओं के बिना दिनचर्या की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान, स्वतंत्र, गौरवमयी जीवन जीने का हक है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं एवं पुरुषों में ज़मीन आसमान का फर्क है जबकि शहरी क्षेत्र में ऐसा नहीं है। इसका कारण है गांव में महिलाओं की कम साक्षरता दर। महिला साक्षरता दर में कमी का मुख्य कारण है पर्याप्त विद्यालयों की कमी, शौचालयों की कमी, महिला अध्यापकों की कमी, लिंग भेदभाव आदि। आंकड़ों के अनुसार 2020 में महिला साक्षरता दर 70.3% जबकि पुरुष साक्षरता दर 84.7%।

आज का युग परिवर्तन का युग है। भारतीय नारी की दशा में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक समाज सुधारकों समाजसेवियों तथा हमारी सरकारों ने नारी उत्थान की ओर विशेष ध्यान दिया है तथा समाज व राष्ट्र के सभी वर्गों में इसकी महत्ता को प्रकट करने का प्रयास किया है । फलत: आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है । विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है।

महिलाओं के साथ अपराध और उनकी सुरक्षा के प्रति हमारा दायित्व- पूरे विश्व में महिलाओं के ऊपर जुल्म होता रहता है। आजकल अनेक अपराध महिलाओं के ऊपर हो रहे हैं। बलात्कार, घरेलू हिंसा, उत्पीड़न, दहेज के लिए ससुराल वालों का परेशान करना, यौन उत्पीड़न जैसी समस्यायें आज भी हमारे देश में बनी हुई है। आज भारत में 65% महिलायें साक्षर है पर इसके बावजूद भी उन पर तरह-तरह के अत्याचार होते हैं। क्या स्त्री पुरुष के मुकाबले प्राकृतिक रूप से कमजोर होने पर स्त्री पर अत्याचार करता रहता है। महिलाओं के साथ अपराध के कारण है कि आज भी पुरुषों की सोच में कोई अंतर नहीं आया है। महिलाओं की आजादी और उनके हक की बात करता है पर घर के अंदर वो स्त्री को अपनी दासी

ही समझता है। 21वीं सदी में होने के बाद भी आज हमारे देश में रोज हजारों लड़कियों को जलाकर मार दिया जाता है क्यूंकि उनके माँ बाप दहेज नहीं दे पाते। ससुराल वाले आये दिन कोई न कोई फरमाईश करते रहते हैं। कड़े कानूनों बनाने के बावजूद भी महिला अपराध में कमी के बजाये दिन प्रतिदिन लगातार उछाल देखने को मिल रहा है। समाज में महिलाओं की सुरक्षा गिरती जा रही है। महिलाएं अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही है। महिलाओं के लिए गंदे होते माहौल को बदलने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु हर आम आदमी की है ताकि हर महिला गर्व से अपने जीवन को जी सके। निर्भया, कठुआ, बुलंदशहर जैसा काण्ड आज हमारे समाज पर कलंक बन चुका है। अपराधी वयस्क महिलाओं को तो शिकार बनाते ही हैं, छोटी बच्चियों को भी नहीं छोड़ते हैं।

महिला सुरक्षा से जुड़े कुछ सुझाव -

- महिलाओं को कभी भी अपने आप को पुरुषों से कम नहीं समझना चाहिए फिर चाहे वह मानसिक क्षमता की बात हो या फिर शारीरिक बल की बात हो।
- महिला को आत्म-रक्षा करने की तकनीक सीखनी होगी तथा उनके मनोबल को भी ऊँचा करने की जरूरत है। इससे महिलाओं को विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में किसी तरह की परेशानी महसूस नहीं होगी।
- महिलाओं को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वे किसी भी अनजान पुरुष के साथ अकेले में कहीं न जाये। ऐसे हालात से उन्हें अपने आप को दूर ही रखना चाहिए।
- महिलाओं को घर से बाहर जाते वक़्त हमेशा अपने साथ मिर्च स्प्रे करने का यंत्र रखना चाहिए। हालांकि ऐसा जरुरी भी नहीं कि इसी पर पूरी तरह निर्भर रहें। वे किसी और विकल्प का भी इस्तेमाल कर सकती है।
- किसी भी अनजान शहर के होटल या अन्य जगह रुकना हो तो वहाँ के स्टाफ के लोगों तथा बाकी चीजों की सुरक्षा को पहले ही सुनिश्चित कर ले।
- महिलाओं को इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि वे इंटरनेट या किसी भी अन्य माध्यम के द्वारा किसी भी तरह के अनजान व्यक्ति से बातचीत करते वक्त सावधान रहे और उन्हें अपना किसी भी तरह का निजी विवरण न दे।

हमें अपनी विचारधारा, सोच और मानसिकता को बदलना होगा। कुदरत ने स्त्री को सिर्फ भोग विलास या शोषण के लिए नहीं बनाया है। उसे भी अच्छा जीवन जीने का हक है जैसे पुरुषों को है। उसके साथ दहेज, पुत्र को जन्म देने, चारित्रिक संदेह के आधार पर शोषण उत्पीड़न नहीं करना चाहिये। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। सरकार को चाहिए कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए कठोर कानून बनाये जायें। बलात्कार के कानून को सख्ती से लागू करना चाहिये। आरोपियों को जमानत नहीं देनी चाहिये। कड़े कानून बनाने चाहिये। हमें महिलाओं की साक्षरता को बढ़ाना होगा। जब 100% लड़कियां, महिलाएं साक्षर होंगी तो वो अन्याय होने पर अपनी मदद खुद कर सकती है।

निष्कर्ष- कुदरत ने स्त्री पुरुष को समान बनाया है। हमें पुरुष को ताकतवर और स्त्री को कमजोर समझने की भूल नहीं करनी चाहिये। क्या स्त्रियों के बिना यह दुनिया चल सकती है ? जब एक स्त्री बच्चे को जन्म देती है तो ही सृष्टि आगे बढ़ती है। इसलिए हमें महिलाओं का सम्मान करना चाहिये। उसके साथ अत्याचार नहीं करना चाहिये। जब महिलाएं सुरक्षित होंगी, पुरुष के साथ हर क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर चलेगीं, तभी देश का विकास संभव है। ❑

" देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से
अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। "

- रविशंकर शुक्ला

दाँतों से जुड़ी कुछ गलतफहमियाँ

✍ डॉ. नवनीत स्वरगिरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

वर्तमान युग में हम खुद को बहुत अक्लमंद समझने वाले कई सच्चाईयों से अनभिज्ञ हैं। उनमें से कई दंत चिकित्सा और दाँतों से संबंधित धारणाएँ हैं जो वैज्ञानिक तौर पर एकदम गलत हैं। उनमें से कुछ गलतफहमियों का आज इस लेख द्वारा हटाने का प्रयास किया जा रहा है।

1. दाँत निकलवाने से आँखें कमजोर हो जाती हैं :

सच - दाँतों के साथ आँखों और दृष्टि का कोई संबंध नहीं होता। यदि आपके दाँत खराब हो चुके हैं और उनका इलाज मुमकिन नहीं है, तो दंत चिकित्सक द्वारा उनके निकाल देने पर आपकी दृष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

2. छोटे बच्चों के दाँतों का इलाज जरूरी नहीं :

सच - यदि आपके बच्चों के दूध के दाँत खराब हो रहे हैं तो यह सोचकर कि वे तो हट जाएँगे और फिर नए दाँत आ जाएँगे, उनका इलाज न करवाने पर बच्चे के जो बाद में नए दाँत आएँगे, उन पर असर हो सकता है। इसके अलावा दाँतों की समस्या की वजह से बच्चा ठीक से चबाकर खा नहीं सकता और उससे उसके शारीरिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है।

3. दूध के दाँतों का इलाज न करें, यदि वे खराब हो गए हैं तो निकलवा दें :

सच - समय से पहले यदि हम बच्चों के मुंह से दूध के दाँतों को हटा दें, तो बाद में आने वाले दाँत इधर-उधर आ जाएँगे जिससे बच्चे को चबाने में मुश्किल हो सकती है। साथ ही उसके दाँत सही जगह पर न आने की वजह से, उसके मुखमण्डल पर भी प्रभाव पड़ सकता है।

4. बच्चों के नए नीचे के दाँत दूध के दाँतों के पीछे निकलना प्राकृतिक नहीं है :

सच - साधारणतः, जब बच्चों के नीचे के नए दाँत आते हैं तो वे दूध के दाँतों के पीछे से ही निकलते हैं। यह एकदम प्राकृतिक है। मुँह में नीचे के दाँत ऊपर के दाँतों से पहले आते हैं।

5. दाँतों की सफाई करवाने से दाँत कमजोर पड़ जाते हैं :

सच - ठीक से दाँतों को साफ नहीं करने पर दाँतों में एक परत पड़ जाती है जो बाद में कठोर हो जाती है। इस परत से मसूड़े और दाँतों के चारों तरफ मौजूद हड्डी कमजोर हो जाती है और फिर दाँत हिलने लगते हैं। इस स्थिति तक पहुँचने से पहले दाँतों की सफाई करवाने से दाँत और मसूड़ें फिर से स्वस्थ और मजबूत हो जाते हैं।

6. दाँतों में दर्द का मतलब, दाँतों को एक दंत चिकित्सक के पास जाकर निकलवा देना चाहिए :

सच - अगर हमारे दाँत खराब होने लगें, हो सके तो तुरंत जाकर उनका इलाज करवा लेना चाहिए। और दाँतों को निकलवा दिया गया तो उनके स्थान पर कृत्रिम दाँत न लगवाए, तो बचे हुए दाँत और उनके चारों तरफ मौजूद हड्डी में विकृति होने की संभावना बढ़ जाती है। ❑

Lockdown और मैं

✍ **अंजना मोरल**
वरिष्ठ निजी सचिव
पाइपलाइन सेवाएं, गुवाहाटी

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनम:।।
हे देवी आपको शत: शत: नमन और आपका सुस्वागतम

जी हाँ। इस धरा की छाती पर, जहाँ कोरोना नामक महामारी ने अपनी पंजों को गाड़ दिया है।यूँ तो ये बिमारी चीन से उत्पन्न हुआ पर इसकी कुदृष्टि हमारे देश में लगभग मार्च महीने 2020 से पड़ा। इसने पूरी पृथ्वी को मौत, डर, खौफ की काली घटा से घेर डाला है। वैज्ञानिक इसकी वैक्सीन के लिए रिसर्च कर रहे हैं। इसके प्रभाव से बचने के लिए हमारे देश में लॉकडाउन घोषित किया गया। मैंने अपने जीवन में लॉकडाउन के बारे में कभी न सुना न देखा। हाँ 100 वर्ष पहले ऐसी और अन्य महामारी के बारे में सुना था।

लॉकडाउन की अवधि के प्रारंभ में तो अनेक समस्याओं को जन्म दिया - जैसे खाने, पीने व अन्य जरूरी सामान की दिक्कत हुई। उदाहरण स्वरूपः एक दिन तो ऐसा कि खाली आलू व चावल से गुजारा करने की सोच रहे थे, परंतु किसी तरह से वे 21 दिन भी बड़े अभाव में बिता।

इसके उपरांत कहीं जाने एवं आने के बाद घर के बाहर sanitize करना पड़ा जो आज तक कर रहे हैं । प्रत्येक वस्तु-फल, सब्जी, वस्तु को sanitizeव धूप में रखकर ही घर में लाया जाता है। इससे मेहनत व समय जाता ही है ।

परंतु जैसे एक अंग्रेजी में कहावत है even a broken clock is right twice a day उसी प्रकार लॉकडाउन में घोषित अवकाश का हमने फायदा भी कुछ हद तक उठाया। जिसमें मैंने वह किया जो पहले कभी न किया हो।

पहला अपनी तीन साल की बेटी व 69 साल की माता-पिता संग अपना अच्छा समय बिताया।

यही नहीं, इस दौरान मैंने अपने शौक को दर्शाया जैसे कि -

1. बच्चों के पसंदीदा चॉकलेट बनाए।
2. केक भिन्न प्रकार के जैसे चॉकलेट आइसिंग,
3. मिठाइयों में घी के पेड़े, बरफी थे ।
4. हलवा।
5. नमकीन में चीप्स पकौड़े, निमकी इत्यादि।
6. जूस/सेक भी

Beauty Parlor को गये ही नहीं। हाय !कोरोना उपर्युक्त काम करते करते समय तो बस कैसे गुजरा पता ही नहीं चला।

कोरोना ने हमको बहुत कुछ सिखाया । हमें धीरज व संयम रखना होगा। अच्छे दिन आने ही वाले हैं ।

अंत में ईश्वर से यही प्रार्थना है -

ऊँ सर्वे भवंतु सुखीनः
सर्वे संतु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्येन्तु।
मा कश्चित् दु:ख भाग्भुवेत् ।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । ❑

> ''साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं:
> यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।''
>
> - अब्राहम लिंकन

एक समृद्ध भारत के लिए एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत

✍ डॉ. रंजन कुमार भागवती
उप मुख्य अनुसंधान वैज्ञानिक
अनुसंधान एवं विकास विभाग, दुलियाजान

"हमें स्पष्ट होना चाहिए। भ्रष्टाचार मारता है। हर साल भ्रष्टाचार के माध्यम से चुराया गया धन से दुनिया के कुल भूखी जनसंख्या को 80 बार खिलाया जा सकता है। लगभग 870 मिलियन लोग हर रात भूखे सोते हैं, उनमें से कई बच्चे हैं; भ्रष्टाचार उन्हें भोजन के उनके अधिकार से वंचित करता है और कुछ मामलों में, उनके जीवन का अधिकार भी।"

नवी पिल्ले, संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार के उच्चायुक्त, जिनेवा, 13 मार्च 2013

भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने और उसे समृद्धि की ओर अग्रसर करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई नई पहल की गई है। न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन का सिद्धांत एक नए भारत में लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता का विश्वास जगाने के लिए एक महत्वपूर्ण 'मंत्र' है। भ्रष्टाचार अपने इच्छित उद्देश्य के खिलाफ संस्थानों को मोड़ता है और देश के लिए भारी सामाजिक और आर्थिक लागतों को जन्म देता है। समाजों में आर्थिक समृद्धि की कुंजी, "समावेशी" संस्थानों का निर्माण और रखरखाव है, जो 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' पर आधारित हो। केवल समावेशी और निष्पक्ष संस्थानों के माध्यम से है कि सामूहिक समृद्धि के लिए स्थितियां प्राप्त होती हैं। भ्रष्टाचार दूसरों पर स्वयं को दी गई प्राथमिकता की एक अभिव्यक्ति है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि "Power corrupts, and absolute power corrupts absolutely" यानि "सत्ता भ्रष्ट करती है और पूर्ण शक्ति बिल्कुल भ्रष्ट करती है", कई अवसरों में हम यह कहावत का प्रमाण देखते हैं। आमतौर पर भ्रष्ट व्यवहार को रोकना, जांच करना और मुकदमा चलाना सरकार की जिम्मेदारी है, लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि अधिकांश विकासशील देशों में भ्रष्टाचार इतना व्यापक हो गया है कि इसे अक्सर राजनीति के सामान्य और वैध हिस्से के रूप में देखा जाता है या केवल व्यवसाय करने की लागत के रूप में। दुनिया में भ्रष्टाचार से होनेवाले संगठित अपराध से होने वाली अवैध अर्थव्यवस्था का अनुमान अब प्रतिवर्ष 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है, जो दुनिया के सभी रक्षा बजट के बराबर है। विश्व भर में रिश्वत के लिए 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की राशि का अनुमान लगाया गया है। सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य बजट का दस प्रतिशत भ्रष्टाचार में खो जाता है। इसमें से अधिकांश पैसा राष्ट्रीय नियंत्रण और निगरानी से बच जाता है। संगठित अपराध, ड्रग्स और आतंकवाद जैसे भ्रष्टाचार के स्वाभाविक भागीदार भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए संस्थानों की क्षमता को कम कर देते हैं, जो अंततः एक अंतहीन दुष्चक्र का कारण बनता है।

भ्रष्टाचार एक देश के सामाजिक और संस्थागत ढांचे को उन तरीकों से नुकसान पहुंचाता है जो सतत आर्थिक विकास को कमजोर करते हैं। भ्रष्टाचार सरकारी राजस्व को कमजोर करता है और इसलिए सरकार उत्पादकता बढ़ाने वाले क्षेत्रों में निवेश करने की क्षमता को सीमित करती है और बड़ी पूंजी परियोजनाओं से जुड़ी निर्णय लेने की प्रक्रिया को विकृत करती है। व्यापक परिधि या जटिलता वाले परियोजना की प्रक्रिया से उनके देश को अतिरिक्त रुपये हासिल करने की ज़रूरतों का पता चलता है तथा अक्सर यह ज्यादा खर्चे की ओर जाता है और बाद की सरकारों को सामाजिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में खर्च में कटौती करने के लिए मजबूर करता है। भ्रष्टाचार निजी क्षेत्र के विकास और नवाचार को हतोत्साहित करता है और अक्षमता के विभिन्न रूपों को प्रोत्साहित करता है। नौकरशाही बाधाएं, वित्तीय लागत और नए व्यापार उपक्रम शुरू करने के मनोवैज्ञानिक बोझ द्वारा उज्ज्वल विचारों के साथ उभरते उद्यमियों को भयभीत किया जाएगा और वे अपने विचारों को कुछ अन्य, कम भ्रष्ट देश में ले जाने का विकल्प चुन सकते हैं या पूरी तरह से समाप्त करने की संभावना भी हो सकती है। इस प्रकार, भ्रष्टाचार चाहे बाजार में प्रवेश करने के लिए एक बाधा हो या प्रारंभ में ही प्रस्थान करने का एक कारक हो, यह आर्थिक विकास को नुकसान पहुँचाता है। इसके अलावा, वैश्विक रूप से स्थापित कंपनियां हमेशा उन देशों में निवेश करना पसंद करती हैं जिनके पास अस्पष्ट नियम और निवेश अनुबंधों को सुरक्षित करने के लिए रिश्वत के रूप में 'अंधा-कर' नहीं होते हैं। व्यवसायों के सर्वेक्षणों से पता चला है कि किसी देश में भ्रष्टाचार की घटना जितनी अधिक होती है, नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन को आवंटित करने के लिए समय की अधिक से अधिक हिस्सेदारी, दंड से बचना तथा रिश्वत प्रणाली से निपटना पड़ता है जो उन्हें कम कर देता है - गतिविधियां ध्यान आकर्षित और अधिक उत्पादक कार्यों से संसाधन दूर करती हैं। भ्रष्टाचार जिसे विश्वास का विश्वासघात के रूप में भी देखा जा सकता है, राज्य की वैधता और जनसंख्या की दृष्टि में नौकरशाही के नैतिक

कद को कम करता है। क्योंकि भ्रष्टाचार भ्रष्टाचार को जन्म देता है, यह जल्द ही संगठित आपराधिक समूहों के निर्माण की ओर जाता है जो कानूनी व्यवसायों में घुस पैठ करने, डराने और सुरक्षा रैकेट बनाने और भय और अनिश्चितता का माहौल बनाने के लिए अपनी वित्तीय शक्ति का उपयोग करते हैं। कमजोर संस्थानों वाले राज्यों में, पुलिस पूर्णतया पराजित हो सकती है, इस संभावना को कम करके कि अपराधी पकड़े जाएंगे। यह बदले में, और अधिक लोगों को भ्रष्ट होने के लिए प्रोत्साहित करता है, आगे कानून प्रवर्तन की दक्षता को बिगाड़ता है - एक दुष्चक्र जो कि आर्थिक रूप से आर्थिक विकास को कमजोर करके, हानिकारक तरीकों से निवेश के माहौल को प्रभावित करेगा। जिन देशों में भ्रष्टाचार का घरेलू राजनीति में दखल है, वहां सत्ता के अलग-अलग केंद्र राज्य की सत्ता को टक्कर देंगे। वैकल्पिक रूप से, राज्य, अपनी शक्ति को संरक्षित करने के लिए, युद्ध का विकल्प चुन सकता है, देश को हिंसा के चक्र में उलझा सकता है। भ्रष्ट विफल, या असफल, बताता है कि हर सरकारी कार्य उच्चतम बोली लगाने वाले के लिए बिक्री के लिए है जो अंततः पूरे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक सुरक्षा खतरा बन जाता है। ईरान, उत्तर कोरिया और लीबिया को पाकिस्तानी परमाणु तकनीक की बिक्री केवल एक नाटकीय उदाहरण है। पिछले कुछ वर्षों में व्यवस्थित रूप से भारत की शासन प्रणालियों को और अधिक मजबूत और पारदर्शी बनाने के प्रयास किए गए हैं जिससे भ्रष्टाचार को कम से कम किया जा सके। इनमें से कुछ पहलें और इससे उत्पन्न होने वाले लाभ इस प्रकार हैं:

डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT): डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर या DBT का उद्देश्य लोगों को सीधे उनके बैंक खातों के माध्यम से सब्सिडी ट्रांसफर करना है। डीबीटी की शुरुआत 1 जनवरी, 2013 को भारत सरकार द्वारा सूचना / निधियों के सरल और तेज प्रवाह के लिए कल्याणकारी योजनाओं में मौजूदा प्रक्रिया को फिर से इंजीनियरिंग करके और लाभार्थियों को सटीक लक्ष्य, डी-नकल और धोखाधड़ी में कमी को सुनिश्चित करने के लिए सरकारी वितरण प्रणाली में सुधार के उद्देश्य से की गई थी। JAM यानी जनधन, आधार और मोबाइल DBT सक्षम हैं और 22 करोड़ से ज्यादा जन धन खाते, 100 करोड़ से ज्यादा आधार और लगभग 100 करोड़ मोबाइल कनेक्शन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश सहित देश की सभी कल्याणकारी योजनाओं में DBT को लागू करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। डीबीटी का पहला चरण 43 जिलों में शुरू किया गया था और बाद में छात्रवृत्ति, महिलाओं, बाल और श्रम कल्याण से संबंधित 27 योजनाओं में 78 और जिलों को जोड़ा गया। 12.12.2014 को देश भर में DBT का और विस्तार किया गया। सात नई छात्र वृत्ति योजनाएं और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) 300 आधार वाले जिलों में DBT के तहत उच्च आधार नामांकन के साथ लाया गया था। इलेक्ट्रॉनिक भुगतान फ्रेमवर्क 2015 में निर्धारित किया गया था। इस ढांचे का अनुसरण अब सभी मंत्रालयों / विभागों और उनके संलग्न संस्थानों / सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा किया जाता है और यह सभी केंद्रीय क्षेत्र (सीएस) / केंद्र प्रायोजित योजनाओं (सीएसएस) और सभी योजनाओं के लिए लागू होता है जहां नकदी के घटक होते हैं। व्यक्तिगत लाभार्थियों को हस्तांतरित किया जाता है। डीबीटी योजनाओं में आधार अनिवार्य नहीं है। चूंकि आधार विशिष्ट पहचान प्रदान करता है और इच्छित लाभार्थियों को लक्षित करने में उपयोगी होता है, इसलिए आधार को प्राथमिकता दी जाती है और लाभार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि आधार DBT सरकारी प्रणाली में दक्षता, प्रभावशीलता, पारदर्शिता और जवाब देही लाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है और शासन में नागरिक के विश्वास को प्रभावित करता है। आधुनिक प्रौद्योगिकी और आईटी उपकरणों का उपयोग न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन के सपने को साकार करने के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। डीबीटी वेबपोर्टल (https://dbtbharat.gov.in/) में उपलब्ध डेटा बताता है कि डीबीटी ने डुप्लिकेट / फर्जी लाभार्थियों को हटाने और लीकेज इत्यादि को हटाने के लिए नेतृत्व किया है, जिसके परिणामस्वरूप सरकार वास्तविक और योग्य लाभार्थी को लक्षित करने में सक्षम हुई है। डीबीटी पहल से दिसंबर, 2019 तक संचयी बचत / लाभ 1, 70,377.11 करोड़ रुपये अनुमानित किए गए हैं।

डिजिटल इंडिया (Digital India): डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 को शुरू किया गया एक अभियान है, जिसमें यह सुनिश्चित करने के लिए कि सरकार की सेवाएँ नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से ऑनलाइन अवसंरचना में सुधार करके और इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ा कर या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए उपलब्ध कराई गई हैं। इस पहल में ग्रामीण क्षेत्रों को हाई-स्पीड इंटरनेट नेटवर्क से जोड़ने की योजना शामिल है। डिजिटल इंडिया में तीन मुख्य घटक होते हैं: सुरक्षित और स्थिर डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास, सरकारी सेवाओं को डिजिटल रूप से वितरित करना, और सार्व भौमिक डिजिटल साक्षरता। सुविधाजनक कैशलेस लेनदेन के लिए एक मजबूत और सुरक्षित संरचना लोगों को कम समय में अधिक खरीदारी करने में सक्षम बनाता है। कई लोग अनायास ही वस्तुओं को खरीद लेते हैं, जिससे आर्थिक विकास में योगदान होता है। माल की मांग में वृद्धि से अधिक उत्पादन और आपूर्ति होगी जो बदले में रोजगार पैदा करेगा। अधिक डिजिटल लेन देन

का मतलब यह भी है कि सरकार को अनुसंधान और नीतियों के बेहतर निर्धारण के लिए अतिरिक्त डेटा उपलब्ध होगा। भारत के लिए, यह एक बड़ा गेमचेंजर हो सकता है - भ्रष्टाचार की जाँच की जा सकती है और पूरे वित्तीय विकास को योजनाबद्ध तरीके से मैप किया जा सकता है। डिजिटल भुगतान में वृद्धि के साथ, नकदी के प्रवाह से उत्पादन एवं उन्हें वितरित करने की लागत को कम किया जा सकता है। कुछ क्षेत्रों में चोरी का खतरा भी कम हो सकता है अगर लोग कम मात्रा में नकदी ले जा सकते हैं। डिजिटल भुगतान सभी लेन देन में जवाब देही सुनिश्चित करते हैं। चूँकि सब कुछ डिजिटल रूप से दर्ज किया जाता है, इसलिए लेन-देन को सत्यापित करने और उन पर नज़र रखने का एक तरीका है। नकद भुगतान का उपयोग करते समय, किसी भी अतिरिक्त खर्च के लिए किसी को भी जिम्मेदार ठहराना मुश्किल हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में मैन्युअल नकद भुगतान की प्रणाली की जगह पेंशन भुगतान के मामले में डिजिटल स्मार्टकार्ड को अनिवार्य कर दिया, तो रिश्वत में 47 प्रतिशत की कमी आई। किसी भी धोखाधड़ी के मामले में भी, इसका तेजी से पता लगाया जा सकता है क्योंकि इसके लिए डिजिटल रिकॉर्ड हैं। उदाहरण के लिए, 2016 में अपनी स्थापना के बाद से, UPI प्रणाली के माध्यम से लेनदेन 2019 के अंत में 2 लाख करोड़ रुपये के मूल्य पर पहुंच गया। रेज़र्पाय की द एरा ऑफ़ राइजिंग फ़िनटेक रिपोर्ट (रेज़र्पाय फिनटेक रिपोर्ट) के अनुसार, भारत ने वित्तीय वर्ष 18 और वित्तीय वर्ष 19 के बीच डिजिटल भुगतान में 383 की विशाल वृद्धि देखी। इससे यह साबित करता है कि भारतीय डिजिटल लेन देन बाजार तेज गति से बढ़ने के लिए तैयार है। वास्तव में, कैशलेस लेनदेन ने क्रांति ला दी है कि भारत में व्यापार कैसे किया जाता है। इन लेनदेन की सरासर सुविधा ने भारत में MSMEs को ग्राहक आधारों के विस्तार में मदद की है। ये संगठन अधिक बाजार पहुंच हासिल करने, प्रचालन को कारगर बनाने और अधिक पारदर्शी भुगतान श्रृंखला की ओर बढ़ने में सक्षम थे। जैसे-जैसे नागरिक ऑनलाइन या ऐप के माध्यम से भुगतान करने के विचार के साथ अधिक सहज होते हैं, डिजिटल लेनदेन का कुल मूल्य भी बढ़ गया है। वर्तमान में, भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन, डिजिटल संचार सेवाओं (दूरसंचार सहित), ई-कॉमर्स, घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, डिजिटल भुगतान, और प्रत्यक्ष सब्सिडी हस्तांतरण सहित डिजिटल पारिस्थिति की तंत्र से सालाना लगभग 200 बिलियन डॉलर का आर्थिक मूल्य उत्पन्न करती है। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल इंडिया पहल से आर्थिक मूल्य में पांच गुना वृद्धि की संभावना डिजिटल सेवाओं, प्लेटफार्मों, अनुप्रयोगों, सामग्री की एक मेजबान के लिए तेजी से बढ़ते बाजार का निर्माण करेगी और 2025 तक इसका समाधान हो जाएगा। यह वैश्विक और स्थानीय व्यवसायों, स्टार्ट-अप और प्लेटफ़ॉर्म-आधारित इनोवेटर्स के लिए एक आकर्षक अवसर का प्रतिनिधित्व करता है, जो उभरती प्रौद्योगिकियों (उदाहरण के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन, ड्रोन और रोबोटिक्स) में भारत के लिए अनुकूलित होंगे। यह पहले से मौजूद भ्रष्ट और प्रतिबंधात्मक एकाधिकार में व्यवधान लाने के लिए भी कल्पना की गई है, जबकि एक ही समय में बड़े पैमाने पर समाज के लिए बेहतर सामान और सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। इसलिए डिजिटल इंडिया अभियान ने वर्ष 2015 में अपनी स्थापना के बाद से दोनों मूर्त और अमूर्त लाभ उत्पन्न किए हैं और आर्थिक समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण इंजन बना रहेगा।

उन बुनियादी सिद्धांतों को जिन के द्वारा भ्रष्टाचार को समृद्धि में मिटाया जा सकता है, लंबे समय से सरकारों को ज्ञात हैं। इनमें से कुछ सरकारी कर्मचारियों के लिए सरकारी खर्च में पारदर्शिता और खुलेपन का निर्माण, 'रेडटेप' को कम करना, लक्षित नकदी हस्तांतरण के साथ प्रतिगामी और विकृत सब्सिडी को बदलना और नई तकनीक की तैनाती हेतु बेहतर वेतन पैकेज सुनिश्चित कर रहे हैं। "यथा राजा तथा प्रजा" का भारतीय दर्शन - राजा या नेता जिस तरह का व्यवहार करते हैं, वह नेतृत्व समर्पित तरीके से होगा, वर्तमान समय में भी समाज के मानसिक और शारीरिक रूप से भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक जुट होने के लिए प्रासंगिक है। मानवीय भावनाओं को दृढ़ता से नुकसान और अनुचितता के सामना में सहानुभूति की भावनाओं से संबंधित हैं। न्याय के मुकाबले अन्याय के खिलाफ लामबंद होना आसान है। हम बुराई से लड़ने के लिए अधिक उत्साही हैं - भूख और गरीबी से लड़ने के लिए कहते हैं, जो भोजन और स्थायी आजीविका को भरपूर बनाता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई हम सभी को लामबंद करती है क्योंकि हम बुराई और अन्याय को दूर करना चाहते हैं। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि बुरे को समुद्र में फेंकना हमारे तटों पर अच्छे के अचानक प्रकट होने का अर्थ नहीं है। युगांडा का अनुभव जिसने वर्ष 2009 में एक बड़े भ्रष्टाचार विरोधी कानून को लागू किया था, जो कि उनके गिरते भ्रष्टाचार संकेतक (विश्व बैंक के भ्रष्टाचार पर नियंत्रण संकेतक) और आर्थिक विकास को इंगित करता है, इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि भ्रष्टाचार विरोधी प्रवर्तन सच्ची भावना में उपाय उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि इस तरह के हस्तक्षेप शुरू करना। भारत के विविध भौगोलिक विस्तार, बहु-जातीय और बहु-धार्मिक समाजों के

मामले में सुधारों के समर्पित कार्यान्वयन के माध्यम से भ्रष्टाचार का उन्मूलन एक आसान काम नहीं है। भारत सरकार के डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर(डीबीटी) मिशन के कार्यान्वयन की स्थिति को दर्शाने वाले भारत के नक्शे पर एक नज़र जैसे ही इस बिंदु को और आगे बढ़ाया जाएगा।

देश की आर्थिक समृद्धि के लिए भ्रष्टाचार का उन्मूलन भी "हम" की साझा भावना का निर्माण करता है, एक अखंड समुदाय, जिसकी ओर से राज्य कार्य करता है। भारतीयों की उन पीढ़ियों को खत्म करने में कुछ समय लगेगा, जो भ्रष्टाचार से मुक्त और पूरी तरह से पारदर्शी और जवाबदेह प्रणाली को अपनाने के लिए अपने दैनिक जीवन में भ्रष्टाचार के आदी हो गए हैं। उस संक्रमण का एक हिस्सा जो 'आप' या 'मैं' के विपरीत है, का मानना है कि यह मुसीबतों से मुक्त नहीं होगा। गैर-विश्वासी और लोग / संगठन, जिन्होंने पुराने इको-सिस्टम से मुनाफा कमाया था, न्यायपालिका के लगातार आह्वान के कारण हर नई पहल में बेईमानी से रोएंगे और पीड़ित की भूमिका निभाएंगे। कुछ सुधारों को क्रांतिकारी नई 'विघटनकारी प्रौद्योगिकियों' के लिए त्वरित गोद लेने की भी आवश्यकता होगी, जिनके लिए सभी को विशेष रूप से भारत के युवा (सहस्राब्दी) की आवश्यकता होगी, जो आम जनता के बीच मोर्चे से आगे बढ़े और आम सहमति बनाए। भारत जिस तेजी से बदलावों का सामना कर रहा है वह अभी भी है: परिवहन सुपर-हाईवे / सड़कों और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे या डिजिटल संचार / कनेक्टिविटी पुलों के निर्माण के रूप में, यह स्पष्ट करता है कि अग्रणी सुधारों के माध्यम से भ्रष्टाचार का उन्मूलन और उनके कार्यान्वयन ने समृद्धि में प्रवेश किया है। भारत के लिए निकट भविष्य में वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए गेंद कोरोल करना निर्धारित किया गया है। हम कितनी तेजी से इस तरह की स्थिति को प्राप्त करते हैं (सभी अन्य कारकों को स्थिर रखते हुए), आखिरकार इस बात पर निर्भर करेगा कि हम नागरिकों के रूप में प्रक्रिया में योगदान करने में सक्षम हैं, हमारे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण तरीके से। ❑

प्रेरक प्रसंग

जीवन में सब्र का महत्व

यह कहानी बहुत ही पुरानी है। उस समय महात्मा गौतम बुद्ध पूरे भारतवर्ष में घुम-घुम कर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रसार कर रहे थे।

धर्म प्रचार के सिलसिले में वे अपने कुछ अनुयायीयों के साथ एक गाँव में घुम रहे थे। काफी देर तक भ्रमण करते रहने से उन्हें बहुत प्यास लग गई थी।

प्यास बढ़ता देख, उन्होंने एक शिष्य को पास के गाँव से पानी लाने के लिए कहा। शिष्य जब गाँव में पहुंचा तो उसने देखा की वहां एक छोटी सी नदी बह रही है जिसमें काफी लोग अपने वस्त्र साफ कर रहे थे और कई अपने गायों को नहला रहे थे। इस कारण नदी का पानी काफी गंदा हो गया था।

शिष्य को नदी के पानी का ये हाल देख लगा कि गुरूजी के लिए यह गंदा पानी ले जाना उचित नहीं होगा। इस तरह वह बिना पानी के ही वापस आ गया। लेकिन इधर गुरूजी का तो प्यास से गला सूखा जा रहा था। इसलिए पुनः उन्होंने पानी लाने के लिए दूसरे शिष्य को भेजा। इस बार वह शिष्य उनके लिए मटके में पानी भर कर लाया। यह देख महात्मा बुद्ध थोड़ा आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने शिष्य से पूछा गाँव में बहने वाली नदी का पानी तो गंदा था फिर ये पानी कहां से लाये? शिष्य बोला - 'हाँ गुरूजी, उस नदी का जल सही में बहुत गंदा था परंतु जब सभी अपना कार्य खत्म करके चले गये तब मैने कुछ देर वहां ठहर कर पानी में मिली मिट्टी के नदी के तल में बैठने का इंतजार किया। जब मिट्टी नीचे बैठ गई तो पानी साफ हो गया। वही पानी लाया हूं।'

महात्मा बुद्ध शिष्य का यह उत्तर सुनकर बहुत खुश हुए तथा अन्य शिष्यों को एक शिक्षा दी कि हमारा जीवन भी नदी के जल जैसा ही है। जीवन में अच्छे कर्म करते रहने से यह हमेशा शुद्ध बना रहता है परंतु अनेको बार जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब हमारा जीवन दुःख और समस्याओं से घिर जाता है, ऐसी अवस्था में जीवन समान यह पानी भी गंदा लगने लगता है।

मित्रों, इसलिए हमें जीवन में दुःख और बुराईयों को देखकर अपना साहस नहीं खोना चाहिए और धैर्य रखना चाहिए गंदगी समान ये समस्याएँ स्वयं ही धीरे-धीरे खत्म हो जाती हैं। ❑

ऑयल ने सीएसआर इंडिया 2020 पुरस्कार प्राप्त किया

दिनांक 1 अक्टूबर, 2020 को ग्रीन्टेक फाउंडेशन द्वारा वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित एक समारोह के दौरान 7वें सीएसआर इंडिया, 2020 अवार्ड्स में ऑयल की निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत परियोजना ऑयल दीक्षा और ऑयल स्वावलंबन को क्रमशः 'प्रमोशन ऑफ एजुकेशन' एवं 'एम्प्लॉयमेंट एनहांसिंग वोकेशनल स्किल्स' की श्रेणी में विजेता घोषित किया गया।

माननीय श्री दीपक मिश्रा, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश (उच्चतम न्यायालय) की अध्यक्षता में अवार्ड नामांकन मूल्यांकन बैठक में उपरोक्त श्रेणियों में ऑयल के सीएसआर कार्यक्रमों को विजेता के रूप में सिफारिश की गई थी।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी कार्यालय को राजभाषा चल वैजयंती शील्ड

हाल ही में दिनांक 07 दिसम्बर 2020 को ऑनलाइन सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी की 56वीं बैठक में वर्ष 2019-20 के लिए पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी कार्यालय को बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सहायक निदेशक राजभाषा विभाग, हिंदी कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी, भारत सरकार की अनेक संस्थाओं के प्रमुखों तथा राजभाषा अधिकारियों की उपस्थिति में प्रतिष्ठित राजभाषा चल वैजयंती शील्ड प्रदान की गई। सहायक निदेशक ने पाइपलाइन मुख्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा भी की।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नराकास, दुलियाजान की 37वीं बैठक संपन्न

दिनांक 23 जुलाई, 2020 को ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 37वीं बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता श्री प्रशांत बरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल ने की। उनके साथ बैठक में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी) भी उपस्थित थे। दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से जुड़े सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज देश ही नहीं, समस्त विश्व कोविड-19 से लड़ रहा है। कोविड-19 से बचाव के लिए भारत सरकार द्वारा कई दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। उसी दिशा में सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए नराकास, दुलियाजान की 37वीं बैठक का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में सदस्य कार्यालयों के साथ राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित धारा 3(3) का अनुपालन, ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण, हिन्दी प्रशिक्षण पर विस्तृग चर्चा की गई।

हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, डिब्रूगढ़ से जुड़े श्री भास्कर बाबू, हिन्दी प्राध्यापक सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी प्रशिक्षण का कार्य सभी कार्यालयों में पूरा किया जाना अनिवार्य है। उन्होंने जुलाई, 2020 माह के लिए हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत में अधिक से अधिक नामांकन भेजने के लिए सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी भी बैठक में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भरें और उसकी एक प्रति नराकास, दुलियाजान को प्रेषित करें। कोविड-19 के इस संकटकालीन परिवेश में भी ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 37वीं बैठक का सफल आयोजन कर पाना, राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति उनकी वचनबद्धता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

अपने उपाध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने पहली बार आयोजित इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अधिक संख्या में सदस्य कार्यालयों के जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिदी में करने का प्रयास करें। श्री हरेकृष्ण बर्मन, सदस्यि सचिव व उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 37वीं बैठक समाप्त हुई।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नराकास, दुलियाजान की 38वीं बैठक संपन्न

दिनांक 28 अक्टूबर, 2020 को ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 38वीं बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने की और उनके साथ बैठक में श्री त्रिदीब सैकिया, उप महाप्रबंधक (जन संपर्क) भी उपस्थित थे। दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/ प्रभारियों ने इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल ने विभिन्नं कार्यालयों से जुड़े सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज देश ही नहीं समस्त विश्व कोविड-19 से लड़ रहा है। कोविड-19 से बचाव के लिए भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुसार सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए नराकास, दुलियाजान की 38वीं बैठक का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित धारा 3(3) का अनुपालन, राजभाषा नियमों का अनुपालन, ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण पर भी चर्चा की गई।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी ने बैठक में हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड नियमित रुप से वेबिनार के माध्यम से नराकास, दुलियाजान की बैठक का आयोजन कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भरें और उसकी एक प्रति नराकास, दुलियाजान को प्रेषित करें। उन्होंने कहा कि तिमाही रिपोर्ट कार्यालय का आइना होता है इसलिए समय पर रिपोर्ट भरना अनिवार्य है। आज

के प्रतिकूल परिस्थिति में भी ऑयल इंडिया लिमिटेड ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 38वीं बैठक का सफल आयोजन किया, जो एक सराहनीय व प्रशंसनीय कदम है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने कहा कि यह नराकास बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दूसरी बार आयोजित की जा रही है। श्री बदरी यादव ने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा किए गए राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों को सकारात्मक, प्रेरणादायक एवं प्रशंसनीय बताया, जिनका उन्होंने स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया। इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के अधिक संख्या में जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिदी में करें ताकि दूसरे कर्मचारी भी प्रोत्साहित होकर हिन्दी में काम करने का प्रयास करेंगे। श्री त्रिदीव सैकिया, उप महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने अपने लघु भाषण में कहा कि राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु सब को साथ मिलकर एक टीम के रुप में काम करना चाहिए।

श्री हरेकृष्ण बर्मन, सदस्य सचिव व उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 38वीं बैठक समाप्त हुई।

ऑयल, दुलियाजान में राजभाषा शील्ड का वितरण समारोह

दिनांक 02.11.2020 को ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के क्षेत्र सम्मेलन कक्ष में श्री दिलीप कुमार दास, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल की अध्यक्षता में राजभाषा शील्ड एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। श्री प्रशांत बरकाकोती, कार्यकारी निदेशक, (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) भी उक्त समारोह में उपस्थित थे। उक्त समारोह के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने के लिए अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, हिन्दी माह समारोह, 2020 के दौरान आयोजित विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा सभागार में उपस्थित सभी लोगों के स्वागत के साथ समारोह की शुरुआत हुई। उन्होंने उपस्थित सभी को राजभाषा शील्ड एवं पुरस्कार वितरण समारोह के आयोजन का उद्देश्य एवं ऑयल में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तृत जानाकारी दी।

तत्पश्चात सभा को संबोधित करते हुए श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने सर्वप्रथम पुरस्कार विजेताओं को बधाई देने के साथ ही अपने विचारों को रखते हुए कहा कि कोविड के चलते राजभाषा शील्ड का वितरण एवं हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने में विलंब हुआ। फिर भी कोविड प्रॉटोकॉल को ध्यान में रखते हुए आज राजभाषा शील्ड एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि असम राज्य 'ग' क्षेत्र में स्थित है तथा ऑयल प्रत्येक वर्ष राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के तहत राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सदैव तत्पर रही है। उन्होंने सभी विभागों के विभागाध्यक्ष तथा कार्मिकों को राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया एवं भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग देने का आग्रह किया।

श्री प्रशांत बरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे देश की हर प्रांत की भाषा भिन्न है, लेकिन कार्यालयीन काम-काज के लिए एक ही भाषा का चयन किया गया था। राष्ट्रीय एकता के लिए यह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। हमें अपने कार्यालयीन काम-काज में ज्यादा से ज्यादा कार्य राजभाषा हिंदी में करने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड हमेशा से ही राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में काम करती आयी है। इसके साथ ही उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा उपस्थित सभी से आग्रह किया कि वे भविष्य में भी राजभाषा के कार्यान्वयन में इसी प्रकार अपना सहयोग प्रदान करते रहे।

श्री दिलीप कुमार दास, आवासी मुख्य कार्यपालक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि असम राज्य 'ग' क्षेत्र में स्थित है तथा उसी के अनुरूप वार्षिक कार्यक्रम में लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। अहिंदी भाषी क्षेत्र के लिए राजभाषा हिंदी में काम करना हमेशा चूनौतिपूर्ण रहता है। लेकिन ऑयल इंडिया लिमिटेड ने अपने सुदक्ष कार्मिकों के द्वारा हमेशा इन चुनौतियों को पार करने की कोशिश की है तथा

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में सराहनीय कार्य किया है। नराकास, दुलियाजान के अध्यक्ष कार्यालय होने के नाते ऑयल प्रत्येक वर्ष समयानुसार बैठक आयोजित करती आयी है। इसके लिए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी कार्यालय से सराहना पत्र भी प्राप्त हुआ है। यह ऑयल के लिए आनंद का विषय है। इस उपलब्धि के लिए उन्होंने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। पुरस्कार प्राप्त विजयी प्रतिभागियों को बधाई देने के साथ ही उन्होंने सभी से एक साथ मिलकर राजभाषा हिंदी में काम करने का आग्रह किया तथा किसी भी कठिनाई के लिए राजभाषा अनुभाग से संपर्क करने का अनुरोध किया।

समारोह के अंत में श्री दिलीप कुमार दास, आवासी मुख्य कार्यपालक, श्री प्रशांत बरकाकोती, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं श्री दिलीप कुमार भूयां, मुख्य महाप्रबंधक (जन संपर्क) के करकमलों से अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता विभागों को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र तथा हिंदी माह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई।

प्रथम- क्षेत्र संचार विभाग

द्वितीय- यंत्रीकरण विभाग

तृतीय- अनुसंधान एवं विकास विभाग

प्रोत्साहन- रसायन विभाग

प्रोत्साहन- चिकित्सा विभाग

हिंदी माह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान

ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में हिन्दी माह समारोह 2020 का अनुपालन

राजभाषा विभाग की नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए वर्ष 2020-21 के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह समारोह का आयोजन दिनांक 01.09.2020 से 30.09.2020 तक किया गया। कोविड-19 महामारी के कारण, भारत सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए इस वर्ष यथासंभव समस्त कार्यक्रम ऑनलाइन के माध्यम से करने का निर्णय लिया गया। हिन्दी माह के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं यथाः- ऑनलाइन टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता तथा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस के उपलक्ष में सभी कार्मिकों के लिए ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी कार्मिकों ने उक्त प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। माइक्रोसॉफ्ट फॉर्म के माध्यम से आयोजित की गई ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने डेस्कटॉप / लैपटॉप / मोबाइल के जरिए अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की। जन संपर्क विभाग के मुख्य महाप्रबंधक श्री दिलीप कुमार भूयां के मार्गदर्शन में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के तत्वावधान में उक्त सभी प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

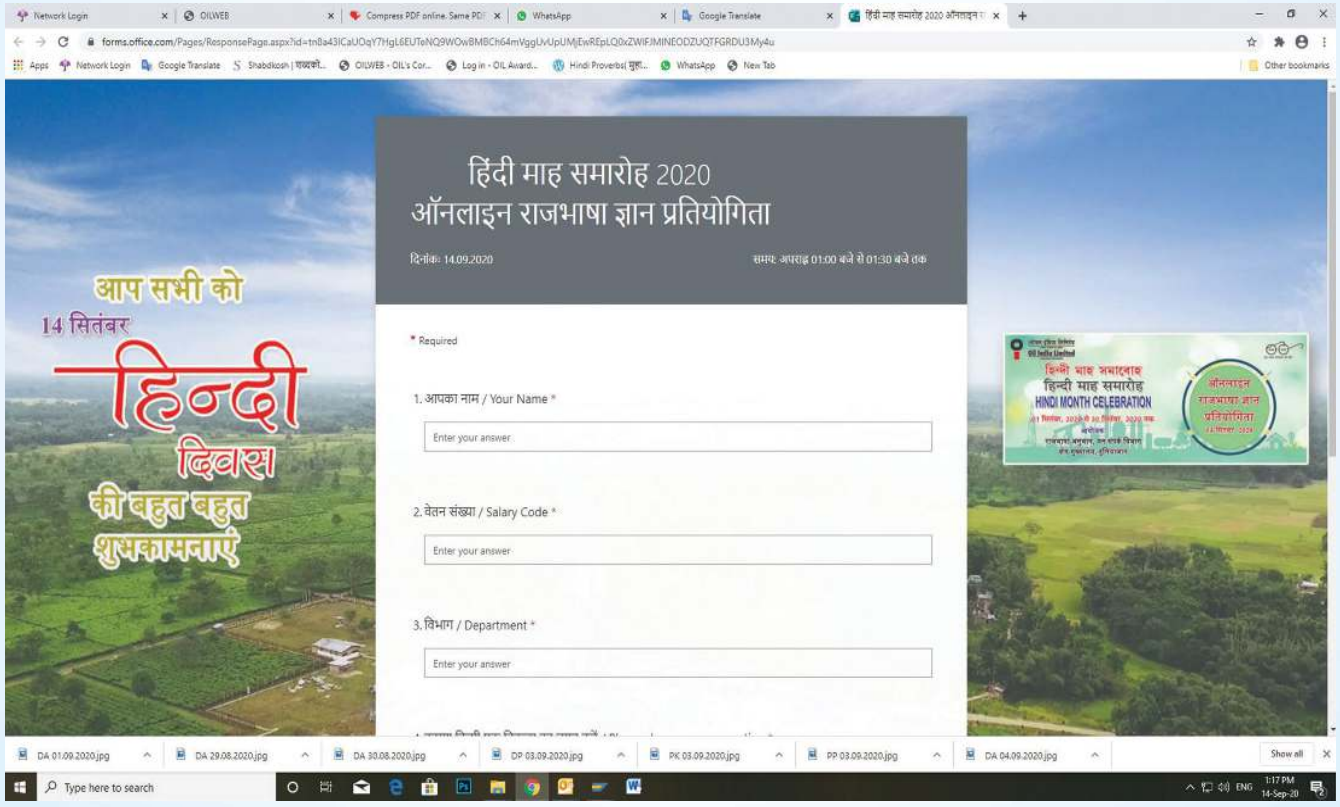

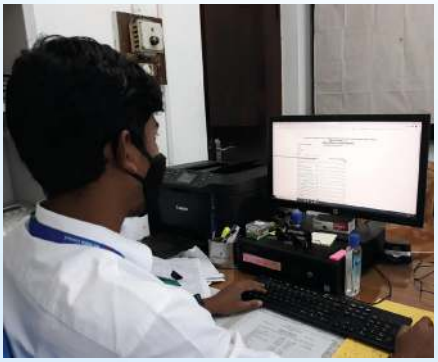

कोलकाता कार्यालय में राजभाषा उत्सव 2020 का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01.09.2020 से 30.09.2020 तक हिन्दी माह का आयोजन किया गया। माह के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कई प्रकार की ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिंदी कार्टून बनाओ प्रतियोगिता, हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। माह का उद्घाटन कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक (को.का.) श्री ए रॉयचौधुरी द्वारा माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से किया गया। उद्घाटन के दौरान सभी अनुभागाध्यक्ष सहित अधिकारी तथा कर्मचारीगण उपस्थित हुए। वैश्विक महामारी कोरोना के चलते इस बार राजभाषा उत्सव के कार्यक्रम के आयोजन को सीमित किया गया तथा उद्घाटन एवं समापन के समय कोविड 19 के नियमों का पालन किया गया। समापन के दौरान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने पर सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा की तथा आशा अभिव्यक्त की कि अगले वर्ष का कार्यक्रम पूरी भव्यता के साथ आयोजित किया जाना सम्भव हो पाएगा। उन्होंने कहा कि कोलकाता कार्यालय सदैव राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सदैव गम्भीर रहा है। विगत 6 वर्षों से लगातार नराकास स्तर पर राजभाषा शील्ड हासिल करना इस बात का प्रतीक है। कार्यक्रम का समापन डॉ वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा उत्सव 2020 मनाया गया

ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइन मुख्यालय में दिनांक 01.09.2020 से 30.09.2020 तक राजभाषा उत्सव 2020 का आयोजन किया गया। पूरे सितम्बर माह तक चले इस उत्सव के दौरान कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों के लिए कई प्रकार की ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। वैश्विक महामारी कोविड 19 के चलते प्रतियोगिताओं के प्रारूप में परिवर्तन किया गया तथा इस बार ऑफलाइन की बजाय सभी प्रतियोगिताएं ऑनलाइन ही आयोजित की गईं। हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर को एक विशेष राजभाषा परिचर्चा का आयोजन किया गया तथा माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से आयोजित इस कार्यक्रम में हिंदी कार्यान्वयन कार्यालय गुवाहाटी के राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री बदरी यादव शामिल हुए। कार्यालय के अनुभागाध्यक्षों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। आज तकनीक की मदद से हिंदी भाषा में काम करना सरल एवं सुविधाजनक हो चुका है। हम भारतीयों को इसका लाभ उठाते हुए क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देते हुए उन भाषाओं के शब्दों को हिंदी भाषा में शामिल कर इस भाषा को और अधिक विस्तार देना चाहिए। उन्होंने कार्मिकों को राजभाषा नियम अधिनियम के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि यदि कार्मिक अपने कार्य की शुरुआत में रोमन हिन्दी से भी करें तो उन्हें इसके लिए संकोच नहीं करना चाहिए। इससे धीरे-धीरे उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। इस अवसर पर कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक (पा.ला.से.) श्री के. टी. वर्की ने कहा कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव जी उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,भारत सरकार ने हमारे लिए बहुत महत्व की बातें कही हैं व हमें इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने सभी को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि 71 वर्ष बीत जाने के बाद भी हिन्दी के काम में उतनी प्रगति नहीं हुई जितनी होनी चाहिए थी और इसका एक मुख्य कारण जो सामने आया है वो यह है कि कार्यालयों में क्लिष्ट हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। जबकि आम बोलचाल की हिन्दी ही सम्प्रेषण का माध्यम होनी चाहिए। फिल्में, गाने और टीवी के चलते हिन्दी बढ़ रही है। भारत सरकार तकनीक की सहायता से हिंदी को आगे बढ़ाने में जुटी हुई है और इसके सुखद परिणाम अब देखने को मिल रहे हैं। मोबाइल पर अथवा कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करना अब बहुत सरल हो गया है। आज अनेक हिंदी सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनकी मदद से आप अपना काम आसानी से हिंदी में कर सकते हैं। ऑयल इंडिया लिमिटेड का पाइपलाइन मुख्यालय हमेशा हिन्दी कार्यांवयन के प्रति गम्भीर रहा है और मैं हमारे मुख्य अतिथि को भी विश्वास दिलाता हूं कि हम इस काम को सदैव आगे बढ़ाते रहेंगे।

राजभाषा उत्सव, 2020 के दौरान कार्यालय के कार्मिकों के लिए ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिंदी कार्टून बनाओ प्रतियोगिता, हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों तथा उनके परिवारजनों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया।

गुवाहाटी कार्यालय के इतिहास में पहली बार 23 सितम्बर को एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी वेबिनार का भी आयोजन किया गया व इस वेबिनार में समस्त ऑयल इंडिया लिमिटेड के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा बुद्धिजीवियों नें भाग लिया। कोविड 19 की वजह से इस बार राजभाषा उत्सव, 2020 के कार्यक्रम के आयोजन को सीमित किया गया तथा उद्घाटन एवं समापन के समय कोविड 19 के नियमों का पालन किया गया। समापन के दौरान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक (पा.ला.से.) श्री के. टी. वर्की ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने पर सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा की तथा आशा अभिव्यक्त की कि अगले वर्ष का कार्यक्रम पूरी भव्यता के साथ आयोजित किया जाना सम्भव हो पाएगा। कार्यक्रम का समापन डॉ वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

'राजभाषा उत्सव 2020': ऑयल इंडिया (पाइपलाइन) का अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार

ऑयल इंडिया लिमिटेड पाइपलाइन मुख्यालय के तत्वावधान में पहली बार वेबैक्स पर आयोजित 'राजभाषा उत्सव 2020' के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में अपने अध्यक्षीय संबोधन के दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सुशील चंद्र मिश्रा ने इस बात को रेखांकित किया कि हिंदी की सरलता और सहजता की वजह से हिंदी बोलने वाले की संख्या लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी को जन-जन तक पहुंचाने का जो काम हिंदी फिल्मों, हिंदी गानों तथा हिंदी धारावाहिकों ने किया है वह शायद ही किसी अन्य माध्यम से करना संभव हो पाएगा।

देश-विदेश में हिंदी : दिशाएं व संभावनाएं विषय पर पाइपलाइन मुख्यालय के इतिहास में पहली बार आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में मॉरीशस से हिंदी विद्वान डॉ. कुमार दत्त विनय गुदारी, दैनिक पूर्वोदय के संपादक एवं पूर्वोत्तर के जानकार रविशंकर रवि, जे एन महाविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश से डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल, डिब्रू महाविद्यालय, डिब्रूगढ़ से सेवानिवृत्त हिंदी विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार, समीक्षक डॉ. अलख निरंजन सहाय, केंद्रीय बौद्ध शिक्षा संस्थान, लेह लद्दाख के प्राध्यापक डॉ. राहुल मिश्रा तथा राजभाषा विभाग, गुवाहाटी के उप निदेशक श्री बदरी यादव आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

साहित्य, शिक्षा और मीडिया के क्षेत्र पर अपने सारगर्भित संबोधन में श्री गुदारी ने कहा कि मॉरीशस को बनाने में हमारे पूर्वजों का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि हिंदी ही वह भाषा है, जिससे हम भारत की मिट्टी से जुड़ पाते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हिंदी लेखक अभिमन्यु अनत की चर्चा करते हुए डॉ. गुदारी ने कहा कि भोजपुरी हमारी संस्कृति एवं परंपराओं की भाषा है। जबकि दैनिक पूर्वोदय के संपादक रविशंकर रवि जी ने पूर्वोत्तर भारत में हिंदी प्रचार प्रसार में समाचार पत्रों की भूमिका विषय पर अपने संबोधन में कहा कि हिंदी प्रचार माध्यमों एवं समाचार पत्रों के कारण ही असम के बाहर के लोगों को कपो फूल की खुशबू मिल सकी।

अनुवाद साहित्य लेखन के साथ स्थानीय लेखकों को एक मंच मिला। इस तरह राष्ट्रीय एकता एवं भाषाई समन्वय का मार्ग प्रशस्त हुआ। डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल ने हिंदी की प्रयोजनीयता और वैश्विक हिंदी के बारे में जानकारी दिए।

राजभाषा विभाग, गुवाहाटी के उप निदेशक श्री बदरी यादव ने राजभाषा हिंदी की दशा और दिशा विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए सरकारी प्रावधानों के बारे में जानकारी दी।

डॉ. अलख निरंजन सहाय ने विश्व भाषा के रूप में उभरती हमारी हिंदी विषय पर अपने संबोधन में कहा कि हिंदी का प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करता है। परदेस में उसका 'देश' प्रेम जोर मारता है और देश में परदेस प्रेम। डॉ. सहाय ने आगे कहा कि पूंजीवादी सभ्यता की मार-काट वाली स्पर्धा, हर वक्त की असुरक्षा, अकेलापन उसे डॉलर देती है। वह यह भी चाहता है कि डॉलर रहे संग में अपना गांव भी रहे तो मजा है। लेह लद्दाख से हिंदी विद्वान डॉ. राहुल मिश्र ने सूचना की दुनिया में हिंदी विषय पर अपने व्याख्यान दिए।

समारोह के आरंभ में आमंत्रित अतिथि वक्ताओं एवं अध्यक्ष एवं मुख्य प्रबंध निदेशक सुशील चंद्र मिश्रा एवं अन्य अधिकारियों का स्वागत करते हुए पाइपलाइन सेवा विभाग के मुख्य महाप्रबंधक के टी वर्की ने कहा कि पाइपलाइन मुख्यालय सौभाग्यशाली है जिसे यह वेबिनार आयोजित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में श्री राजीव कुमार गुप्ता, श्री पंकज कुमार गोस्वामी, डॉ. पी चंद्रशेखर, विश्वजीत राय ने भी अपने विचार रखे, जबकि अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का कुशल संचालन करने वाले पाइपलाइन मुख्यालय के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. वीएम बरेजा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

हिन्दी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा नवंबर, 2019 में आयोजित हिन्दी प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ परीक्षा के परिणाम

क्र सं	परिक्षार्थी का नाम	विभाग	ऑयल आईडी	परीक्षा	प्राप्तांथक	परिणाम
1	श्री जयंत दत्ता	पश्चिमी परिसंपत्ति	201594	प्रबोध	82%	उत्तीर्ण
2	श्री गोविंद शर्मा	एलपीजी	201260	प्रबोध	81.6%	उत्तीर्ण
3	श्री जीवन कुमार गोगोई	एलपीजी	200481	प्रबोध	76%	उत्तीर्ण
4	श्री ए.यू. अहमद	एलपीजी	103498	प्रबोध	73.6%	उत्तीर्ण
5	श्री देबजीत गोगोई	एलपीजी	201444	प्रबोध	76.6%	उत्तीर्ण
6	श्री पराग ज्योरति चांगमाई	एलपीजी	201264	प्रबोध	77.3%	उत्तीर्ण
7	श्री हरेन चंद्र सैकिया	एलपीजी	101824	प्रबोध	78.6%	उत्तीर्ण
8	श्री प्रजेश दास	एलपीजी	200948	प्रबोध	78.3%	उत्तीर्ण
9	श्री दीपांकर कुंवर	सामग्री	201807	प्रबोध	81.3%	उत्तीर्ण
10	श्री जयंत दास	सामग्री	201723	प्रबोध	84.6%	उत्तीर्ण
11	श्री लक्ष्यधर गोगोई	सामग्री	201735	प्रबोध	84%	उत्तीर्ण
12	श्री प्रांजल प्राण भट्टाचार्या	सतर्कता	5582	प्रबोध	81.3%	उत्तीर्ण
13	श्री बिकाश भराली	सतर्कता	200300	प्रबोध	83.3%	उत्तीर्ण
14	श्री प्रणब ठाकुरिया	सामग्री	201296	प्रवीण	78.6%	उत्तीर्ण
15	श्री निपन शेनसोवा	सामग्री	201294	प्रवीण	79.3%	उत्तीर्ण
16	श्री ऋतुराज बोरा	सामग्री	201313	प्रवीण	81%	उत्तीर्ण
17	श्री कौशिक दत्ता	सामग्री	201307	प्रवीण	80%	उत्तीर्ण
18	श्री ऋृत्विक शर्मा तामुली	सामग्री	201306	प्रवीण	82.6%	उत्तीर्ण
19	श्री चित्ररंजन चेतिया	सामग्री	201615	प्रवीण	79.6%	उत्तीर्ण
20	सुश्री रंजीता रॉय तपादर	सामग्री	201311	प्रवीण	82.6%	उत्तीर्ण
21	श्री सुरेश हजारिका	एलपीजी	201276	प्रवीण	75%	उत्तीर्ण
22	श्री अनंत प्रतीम निलकंथ नेउग	एलपीजी	201262	प्रवीण	79%	उत्तीर्ण
23	श्री निलुत पाल गोगोई	एलपीजी	202370	प्रवीण	70%	उत्तीर्ण
24	श्री अखिल शर्मा	एलपीजी	201254	प्रवीण	76.6%	उत्तीर्ण
25	श्री राजदीप हजारिका	एलपीजी	201117	प्रवीण	63%	उत्तीर्ण
26	श्री मोनदीप सोनोवाल	एलपीजी	201270	प्रवीण	75.6%	उत्तीर्ण
27	श्री संजय चक्रवर्ती	एलपीजी	104051	प्रवीण	80.3%	उत्तीर्ण
28	श्री सत्य रंजन चेतिया	एलपीजी	6146	प्रवीण	81%	उत्तीर्ण
29	श्री अर्पण डेकारी	एलपीजी	200449	प्रवीण	76.6%	उत्तीर्ण
30	श्री अंशुमान तामुली	वित्त एवं लेखा	202378	प्रवीण	79%	उत्तीर्ण
31	श्री जाह्नु बोरा	वित्त एवं लेखा	202387	प्रवीण	73.3%	उत्तीर्ण
32	श्री कल्पजीत बरूवा	क्षेत्र संचार	200062	प्रवीण	78.6%	उत्तीर्ण
33	श्री जयंत बुढ़ागोंहाई	क्षेत्र संचार	201215	प्रवीण	85%	उत्तीर्ण
34	श्री पी. तिरूपति राव	ऑयल हा. से. स्कू ल	201316	प्राज्ञ	79.6%	उत्तीर्ण
35	श्री राजर्षि पाणिग्राही	अनुसंधान एवं विकास	202324	प्राज्ञ	84.6%	उत्तीर्ण
36	श्री नयन मणि शर्मा	चिकित्सा	202350	प्राज्ञ	79.3%	उत्तीर्ण
37	श्री मानस प्रतीम चौधरी	ओजीपीएल एण्ड पी	202756	प्राज्ञ	84%	उत्तीर्ण
38	श्री सिमंत वैश्य	चिकित्सा	202359	प्राज्ञ	80%	उत्तीर्ण
39	श्री वेंकट चक्रवर्ती	एलपीजी	201846	प्राज्ञ	84.3%	उत्तीर्ण
40	सुश्री अपराजिता बोरा	कार्मिक	201732	प्राज्ञ	85%	उत्तीर्ण

खुद को एवं दूसरों को संरक्षण प्रदान करें:

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

क्या करें

बार-बार हाथ धोने का अभ्यास करें। साबुन और पानी से हाथ धोएं या एल्कोहॉल आधारित हैंड रब का उपयोग करें। भले ही साफ दिखाई दें, फिर भी हाथ धोएं।

छींकते और खांसते समय अपनी नाक और मुंह को रूमाल या टिशू से ढंक लें।

उपयोग के तुरंत बाद टिशू को बंद डिब्बे में फेंक दें।

यदि आपको अस्वस्थता (बुखार, सांस लेने में कठिनाई और खांसी) महसूस हो, तो डॉक्टर से परामर्श लें। डॉक्टर से परामर्श लेने के दौरान अपने मुंह और नाक को ढंकने के लिए मास्क / कपड़े का इस्तेमाल करें।

यदि आपको ये लक्षण दिखाई दें, तो कृपया राज्य हेल्पलाइन नंबर या स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय के 24X7 हेल्पलाइन नंबर 011-23978046 पर कॉल करें।

भीड़-भाड़ वाली जगहों में भाग लेने से परहेज करें।

क्या न करें

यदि आपको खांसी और बुखार का अनुभव हो रहा है, तो किसी के साथ निकट संपर्क रखें।

अपनी आंखों, नाक और मुंह को स्पर्श करें।

सार्वजनिक रूप से थूकें।

ई-12014/1/2013-हिन्दी

भारत सरकार
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय
Government of India
Ministry of
Petroleum & Natural Gas
New Delhi - 110 001

सत्यमेव जयते

संयुक्त सचिव
JOINT SECRETARY

दिनांक: २७ नवंबर, 2020

प्रिय श्री मिश्रा

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के उपक्रमों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और अधिक से अधिक सरकारी काम हिंदी में करने को प्रोत्साहित करने के प्रयोजन से वर्ष 2013-14 में राजभाषा शील्ड योजना प्रारंभ की गई थी। योजना के अंतर्गत राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले उपक्रमों को उनके द्वारा प्राप्त स्थान के आधार पर पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड, ट्रॉफी अथवा कप देकर सम्मानित किया जाता है।

योजना के अंतर्गत पुरस्कारों का निर्धारण करने के लिए सभी उपक्रमों से निर्धारित प्रपत्र में सूचना मंगाई गई और इस सूचना के आधार पर मंत्रालय में पुरस्कारों का निर्धारण करने के लिए गठित समिति ने आंकड़ों का आकलन किया और उसके आधार पर पुरस्कारों का निर्धारण किया गया है।

आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आपके उपक्रम को वर्ष 2019-20 का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है जिसके अंतर्गत आपको पुरस्कार स्वरूप पेट्रोलियम राजभाषा **शील्ड** प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आप और आपके उपक्रम के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। ये पुरस्कार मंत्रालय द्वारा आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में दिए जाएंगे जिसके संबंध में यथा समय आपको सूचित कर दिया जाएगा।

आशा है कि राजभाषा हिंदी को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने में आपका योगदान निरंतर जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

27/11

(रोहित माथुर)

श्री सुशील चन्द्र मिश्र,
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,
ऑयल इंडिया लि.,
नई दिल्ली

ऑयल राजभाषा शील्ड
एवं
पुरस्कार वितरण समारोह
OIL Rajbhasha Shield
&
Prize Distribution Ceremony
दिनांक / Date: 02.11.2020
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

ऑयल राजभाषा शील्ड
एवं
पुरस्कार वितरण समारोह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान
Town Official Language Implementation Committee, Duliajan
दिनांक / Date: 28-10-2020
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
Oil India Limited, Field Headquarter, Duliajan